Postal Registration No. CHD/0107/2021-2023 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 23 अंक 12 30 दिसम्बर, 2023 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

महान योद्धा महाराजा सूरजमल

(13 फरवरी, 1707 – 25 दिसम्बर, 1763)

25 दिसम्बर, बलिदान दिवस पर विशेष

भूमिका

भारतीय इतिहास में महाराजा सूरजमल का नाम एक वीर योद्धा और बुद्धिमान शासक के रूप में उल्लेखित है। वे भरतपुर के जाट राजवंश के महान शासक थे, जिन्होंने 18वीं सदी में अपनी शक्ति और प्रभाव को मजबूती से स्थापित किया। उनकी गणना भारत के सबसे प्रभावशाली और शक्तिशाली राजाओं में की जाती है। उनका जीवन, उनके संघर्ष, उनकी नीतियां, और उनकी वीरता ने न केवल उनके समय में, बल्कि आज भी लोगों को प्रेरित किया है। इस लेख में हम महाराजा सूरजमल के जीवन के विभिन्न पहलुओं का विस्तृत वर्णन करेंगे।

बाल्यकाल और शिक्षा

महाराजा सूरजमल भगवान श्रीकृष्ण के वंशज है। श्रीकृष्ण से लेकर भरतपुर नरेश श्री बृजेन्द्र सिंह तक 101वीं पीढ़ी श्रीकृष्ण जी के वंश की आती है और महाराजा सूरजमल इस वंश में 90वीं पीढ़ी में आते है। महाराजा सूरजमल का जन्म 1707 में हुआ था। उनका कद 7 फुट 2 इंच था और 4 मण वजन था। जिसका आज 150 किलो होता है। महाराजा सूरजमल लड़ाई के मैदान में मुंह में घोड़े की लगाम पकड़कर, दोनों हाथों से तलवारे चलाने की कला में माहिर थे और अपने समय के एक शक्तिशाली योद्धा थे। इन्होंने अपने जीवन में 80 युद्ध लड़े और कभी भी किसी युद्ध में नहीं हारे। उन्होंने मुगल मराठे अंग्रेज और राजपूत सभी को हराया। बागडूं के युद्ध में तो उन्होंने राजपूतों और मराठों को करारी शिख्सत दी थी। उनके बाल्यकाल से ही उनके शौर्य और बुद्धिमता के प्रमाण मिलते हैं। उन्हें बचपन से ही युद्ध कौशल और शासन प्रबंधन की शिक्षा दी गई थी। उनका शिक्षण ऐसे परिवेश में हुआ जहां उन्होंने राजनीतिक चातुर्य और सामरिक नीतियों को समझा। उन्हें संस्कृत, हिंदी और फारसी भाषाओं का भी अच्छा ज्ञान था, जो उस समय के शिक्षित शासकों की पहचान थी। उनकी शिक्षा ने उन्हें एक समर्थ और निपुण योद्धा बनने में मदद की।

पारिवारिक पृष्ठभूमि

महाराजा सूरजमल बदन सिंह के पुत्र थे, जो भरतपुर के संस्थापक और प्रमुख जाट नेता थे। उनका परिवार एक प्रतिष्ठित योद्धा कुल में से था, जिसने भारतीय इतिहास में अपनी वीरता और साहस के लिए ख्याति प्राप्त की थी। सूरजमल के पिता ने अपने साहस और राजनीतिक दूरदर्शिता से भरतपुर रियासत की नींव रखी। इस वीर परिवार की परंपरा ने सूरजमल को एक ऐसे योद्धा के रुप में ढाला जो न केवल युद्ध कौशल में निपुण थे, बल्कि राजनीतिक और प्रशासनिक मामलों में भी सक्षम थे। उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि ने उनके चरित्र और शासन कौशल को प्रभावित किया था।

मुगलों के साथ संघर्ष

महाराजा सूरजमल ने अपने शासनकाल के दौरान मुगल सामाज्य के साथ कई बार संघर्ष किया। उनके राज्य की सीमा मुगल सामाज्य से लगती थी, जिससे अक्सर संघर्ष की स्थितियां बनी रहती थीं। सूरजमल ने मुगल सेनाओं के खिलाफ कई युद्धों में भाग लिया और अनेक बार विजय प्राप्त की। उनकी सबसे प्रमुख विजयों में से एक दिल्ली निकट

शेष पेज–2 पर

दीनबन्धु चौधरी छोटूराम जयंती समारोह 15.02.2024 को चण्डीगढ़ में मनाई जायेगी।

जाट सभा चंडीगढ़ / पंचकूला व चौधरी छोटू राम सेवा सदन कटरा द्वारा बसंत पंचमी एवं दीनबंधु चौधरी छोटूराम की 143वीं जयंती समारोह का आयोजन **15 फरवरी 2024 (वीरवार)** को जाट भवन, सैक्टर–27, चण्डीगढ़ में किया जाएगा। हरियाणवी रागनी तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम समारोह के मुख्य आकर्षण होंगे। इस समारोह के मुख्य अतिथि माननीय आचार्य देवव्रत महामहिम राजपाल, गुजरात होंगे। समारोह की अध्यक्षता चौधरी रणजीत सिंह, जेल व बिजली मन्त्री, हरियाणा करेंगे। श्रीमति किरण खेर, माननीय सांसद चण्डीगढ़ व चौधरी बिरेन्द्र सिंह, पूर्व केन्द्रीय मन्त्री, समारोह में बतौर विशिष्ट अतिथि उपस्थित होंगे। इस अवसर पर मेधावी छात्र, छात्राओं और खेलों में उत्कृष्ट स्थान प्राप्त करने वाले खिलाड़ियों विजेताओं को सम्मानित किया जाएगा। जाट सभा के आजीवन सदस्य जो की जनवरी 2023 से दिसंबर 2023 के बीच सेवानिवृत्त हुए हैं और जाट सभा के आजीवन सदस्य जो 80 वर्ष की आयु पूरी कर चुके है उन्हें भी सम्मानित किया जायेगा। वे अपना नाम, पता व विभाग का नाम दूरभाष नंबर जाट सभा चंडीगढ़ को 15 जनवरी 2024 तक सूचित करें। इस अवसर पर एक स्मारिका भी प्रकाशित की जाएगी। आप इस स्मारिका में निबंध या कविता भेजना चाहते हो तो 15 जनवरी, 2024 तक भेजें। समारोह को सफल बनाने के लिए सभी सदस्यों से निवेदन है कि आप सह परिवार तथा अपने अन्य साथियों सहित समारोह में भाग लें।

जाट सभा की ओर से आप सभी को नये वर्ष 2024 की हार्दिक शुभ कामनाएं।

शेष पेज–1

आलमपुर की लड़ाई थी। उनके युद्ध कौशल और रणनीति ने मुगलों को कई बार परास्त किया। ये संघर्ष न केवल सूरजमल की सैन्य क्षमता को दर्शाते हैं, बल्कि उनकी राजनीतिक चतुराई को भी प्रकट करते हैं। उनके इन प्रयासों ने भरतपुर रियासत को मजबूती प्रदान की और उसे मुगल साम्राज्य के प्रभाव से मुक्त रखा।

मराठों की सहायता

महाराजा सूरजमल ने अपने शासन काल में मराठों की भी सहायता की थी। उन्होंने मराठा सेनाओं के साथ मिलकर मुगलों के विरुद्ध युद्ध में भाग लिया था। इस सहयोग ने भारतीय उपमहाद्वीप की राजनीति में एक महत्वपूर्ण बदलाव लाया। सूरजमल की सेना ने मराठों के साथ मिलकर अनेक महत्वपूर्ण युद्धों में भाग लिया, जिसमें उनकी रणनीतिक क्षमता और युद्ध कौशल का परिचय मिलता है। उनका यह कदम न केवल उनके शत्रुओ के विरुद्ध एक साम्राज्य नीति थी, बल्कि यह भी दर्शाता है कि वे भारतीय साम्राज्य की रक्षा और स्थिरता के लिए कितने प्रतिबद्ध थे। महाराजा सूरजमल का यह कदम उनके दूरदर्शी नेतृत्व का परिचायक है। महाराजा सूरजमल ने 1761 ई. में मराठों और अहमदशाह अब्दाली के बीच में हुये युद्ध में मराठों को सलाह दी थी कि

1. अपने बीबी बच्चों को मेरे अधीन किलो में सिफ्ट कर दों।
2. लड़ाई आमने सामने ना होकर गौरिला पद्धति अपनाई जायें।
3. सर्दी की बजायें गर्मी में युद्ध शुरू किया जायें।
4. मेरे पास से कम से कम 10 हजार सैनिकों की सहायता ली जायें। मराठों ने महाराजा सूरजमल की कोई बात नहीं मानी और जनवरी में ही युद्ध शुरू कर दिया। अपनी गलतियों की वजह से मराठें युद्ध हार गये। सेनापति भाऊ मारा गया और 20–22 हजार सैनिक भी मारे गये बाकी बचे भरतपुर भाग गये और जो बिमार और घायल थे उनकी महाराजा सूरजमल में उपचार करवाया और सहायता की।

उनको महाराष्ट्र छोडने का प्रबन्ध किया और अपने 2500 सैनिक उनके साथ मदद के लिये भेजे। जो मराठा फौज ने वापिस नहीं आने दिये और महाराष्ट्र में नासिक जिले बसा लिये। आज भी नासिक जिले में जाटों के विभिन्न गोत्रों के 22 गांव है। जिनको "जाट बाईसा" कहा जाता है।

ब्रिटिश शक्तियों के साथ युद्ध

महाराजा सूरजमल ने अपने शासन काल में ब्रिटिश उपनिवेशवादी शक्तियों के साथ भी संघर्ष किया। उन्होंने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की बढ़ती हुई सता और प्रभाव का मुकाबला किया और अपनी स्वतंत्रता और संप्रभुता की रक्षा के लिए लड़े। सूरजमल की सेनाओं ने कई मौकों पर ब्रिटिश सेनाओं को चुनौती दी और उन्हें कई बार पराजित किया। इस संघर्ष ने भरतपुर रियासत की स्वतंत्रता और संप्रभुता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। महाराजा सूरजमल के इस पयास ने भारतीय उपमहाद्वीप में ब्रिटिश प्रभाव के विस्तार को धीमा कर दिया और उन्हें एक कुशल योद्धा और साहसी नेता के रूप में स्थापित किया।

जन कल्याण कार्य

महाराजा सूरजमल केवल एक वीर योद्धा ही नहीं, बल्कि एक कुशल प्रशासक और जन कल्याणकारी शासक भी थे। उन्होंने अपनी रियासत में जन कल्याण के लिए अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाए। उन्होंने कृषि, जल प्रबंधन और व्यापार के क्षेत्र में सुधार किए। सूरजमल ने कई नहरों का निर्माण करवाया, जिससे कृषि क्षेत्र में वृद्धि हुई। उनके शासनकाल में जनता के लिए सुविधाओं का विकास हुआ और शिक्षा को भी बढ़ावा दिया गया। महाराजा सूरजमल के ये प्रयास उनके जन–केंद्रित शासन का परिचायक है। उनके इन कार्यों ने उनकी प्रजा के जीवन स्तर को उन्नत बनाया और उन्हें एक समर्थ और लोकप्रिय शासक के रूप में स्थापित किया।

युद्ध कौशल

महाराजा सूरजमल एक कुशल योद्धा और युद्धकला के मास्टर थे। उनके युद्ध कौशल में रणनीति, ताकत और चतुराई का संगम था। उन्होंने युद्ध के लिए विशेष तरीके और तकनीकों का विकास किया, जो उस समय के युद्ध कला में क्रांतिकारी थे। सूरजमल ने दुश्मन की ताकत और कमजोरियों का बारीकी से अध्ययन करके युद्ध की योजना बनाई। उनकी युद्ध रणनीति में आश्चर्यजनक हमले, घेराबंदी तकनीकें, गोरीला युद्ध प्रणाली और दुश्मन की रसद लाइनों को बाधित करना शामिल था। उन्होंने अपनी सेना को अत्याधुनिक हथियारों और रक्षा तकनीकों से लैस किया। महाराजा सूरजमल की युद्ध नीति में न केवल शारीरिक शक्ति बल्कि मानसिक चातुर्य और रणनीतिक सोच भी शामिल थी। उनके युद्ध कौशल ने उन्हें अपने समय के महानतम योद्धाओं में से एक बना दिया था और उनकी विजयों ने उन्हें इतिहास में अमर बना दिया।

बांगडू का युद्ध

21 सितम्बर 1743 ईस्वीं में जयपुर के राजा सवाई जयसिंह की मृत्यु के बाद उसके दोनों पुत्रों ईश्वरी सिंह और माधों सिंह में गृह युद्ध हो गया और यह गृह युद्ध कई साल तक चलता रहा। सिहांसन पर बड़े पुत्र का हक बनता था लेकिन छोटे बेटे माधव सिंह के मामा मेवाड़ी सम्राट जगत सिंह व कोटा, बुन्दी, जोधपुर, मराठे मलाहराव होल्कर, गंगाधर

तांतियां व जयपुर की सेना मिलाकर सात राज्यों की सेना ने इक्कठे होकर माधव सिंह को राजगद्दी पर बैठा दिया। बड़े बेटे ईश्वरी सिंह ने अपने पिता के दोस्त मुंह बोले ताऊ भरतपुर सम्राट बदन सिंह से मदद की गुहार लगाई। अगस्त 1748 ईस्वीं में 15 हजार सैनिक देकर सूरजमल को ईश्वरी सिंह की सहायता के लिये भेजा। इस युद्ध में सभी सातों राज्यों की सैना को हरा कर ईश्वरी सिंह को गद्दी पर बैठानें वाले महाराजा सूरजमल ही थे। महाराजा सूरजमल ने मुस्लाधार वर्षा के बीच एक दिन में 160 सैनिकों को मार गिराया था और सातों राज्यों की सवा लाख सेना को करारी शिकस्त दी थी।

शहादत और वीरता

महाराजा सूरजमल की शहादत ने उन्हें भारतीय इतिहास में अमर वीर योद्धा के रूप में स्थापित किया। उनका निधन 25 दिसम्बर, 1763 में दिल्ली के निकट हिंडन नदी के तट पर हुए एक युद्ध में हुआ था। यह युद्ध उनकी वीरता और उनके बलिदान का प्रतीक है। सूरजमल ने अपने जीवन के अंतिम क्षणों तक अपनी रियासत और जनता के लिए लड़ा। उनकी शहादत ने उनके समर्थकों और प्रजा में गहरा प्रभाव छोड़ा। उनकी मृत्यु के बाद भी उनकी वीरता के किस्से और उनके द्वारा किए गए कार्यों की कहानियां संस्कृति और इतिहास में जीवित रहे। उनके बलिदान ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रीयता की भावना को प्रेरित किया। महाराजा सूरजमल की शहादत और उनकी वीरता की कहानियां आज भी भारतीय इतिहास और संस्कृति में उन्हें एक नायक के रूप में याद किया जाता हैं। उनका जीवन और बलिदान भारतीय इतिहास के एक गौरवशाली अध्याय के रूप में सम्मानित है।

युद्ध और राजनीतिक करियर में गलतियों

महाराजा सूरजमल एक महान योद्धा और शासक थे, लेकिन उनके जीवन में कई बार ऐसे मौके आए जब उन्होंने गलतियाँ की। इन गलतियों में से कुछ युद्ध के मैदान में हुई, जबकि कुछ राजनीतिक निर्णयों में। एक बार, उन्होंन अपनी सेना को एक ऐसे युद्ध में झोंक दिया जिसके लिए वे पूरी तरह से तैयार नहीं थे, जिसका परिणाम उनके लिए हानिकारक साबित हुआ। इसके अलावा, कुछ मौकों पर उन्होंने अति आत्मविश्वास के कारण गलत रणनीतिक निर्णय लिए, जिससे उनकी सेना को नुकसान हुआ। राजनीतिक क्षेत्र में भी, कभी–कभी उन्होंने अपने सहयोगियों और शत्रुओं की योजनाओं का सही आँकलन नहीं किया, जिससे उन्हें राजनीतिक रूप से नुकसान उठाना पड़ा। इन गलतियों ने सूरजमल को यह सिखाया कि युद्ध और राजनीति दोनों ही क्षेत्रों में सावधानी और समग्र विचार–विमर्श आवश्यक हैं। उनकी इन गलतियों से यह सबक मिलता है कि किसी भी निर्णय में जल्दबाजी और अति आत्मविश्वास से बचना चाहिए।

कार्यशैली से सीखने योग्य पाठ

महाराजा सूरजमल की कार्यशैली से हमें कई महत्वपूर्ण पाठ सीखने को मिलते हैं। उनके जीवन और कार्यों से प्रेरणा लेकर हम अपने जीवन और करियर में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। सबसे पहले, उनकी दूरदर्शिता और रणनीतिक सोच हमें बताती है कि किसी भी समस्या का समाधान ढूंढने के लिए गहराई से विचार करना और योजना बनाना जरूरी है। उनकी युद्ध कौशल और राजनीतिक चतुराई हमें सिखाती है कि संकट के समय में शांत और सजग रहना कितना महत्वपूर्ण है। इसके अलावा, सूरजमल का जन कल्याण के प्रति समर्पण हमें यह दर्शाता है कि व्यक्तिगत लाभ से बढ़कर सामाजिक कल्याण होना चाहिए। उनके जीवन से यह भी सिखने को मिलता है कि कठिन परिस्थितियों में धैर्य और साहस के साथ काम लेना चाहिए। अंत में, महाराजा सूरजमल की गलतियों से हमें यह पाठ मिलता है कि हर गलती एक सीख है और इससे उबरकर आगे बढ़ना चाहिए। उनका जीवन हमें नेतृत्व, साहस, और विश्वास की महता का पाठ पढ़ाता है।

निष्कर्ष

महाराजा सूरजमल का जीवन और उनकी उपलब्धियाँ भारतीय इतिहास के एक सुनहरे अध्याय का हिस्सा है। उनकी वीरता, बुद्धिमता, और जन कल्याण के प्रति समर्पण आज भी हमें प्रेरणा देते हैं। उनके युद्ध कौशल, राजनीतिक चतुराई, और उनकी शहादत ने उन्हें एक अमर नायक के रूप में स्थापित किया है। महाराजा सूरजमल का जीवन हमें शक्ति, साहस और आत्म–सम्मान का पाठ पढ़ाता है, जो हर युग में मानवता के लिए प्रेरणादायक है।

ऐसे कीर्ति पुरूष योद्धा को लेखक शतः शतः नमन करता है।

डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक, आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति व
जाट सभा, चंडीगढ़ व पंचकूला एवं
चेयरमैन, चौ० छोटूराम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

चौधरी चरण सिंह

– जयपाल सिंह पूनियां, एम.ए. इतिहास,
वन मंडल अधिकारी (सेवानिवृत)

चौधरी चरण सिंह भारत के पांचवें प्रधानमंत्री थे। उन्होंने यह पद 28 जुलाई 1979 से 14 जनवरी 1980 तक सम्भाला। चौधरी चरण सिंह ने अपना सम्पूर्ण जीवन भारतीयता और ग्रामीण परिवेश की मर्यादा में लिया। चरण सिंह किसानों की आवाज बुलन्द करने वाले प्रखर नेता माने जाते थे।

यह समाजवादी पार्टी तथा काग्रेस (ओ) के सहयोग से देश के प्रधानमंत्री बने। इन्हें काँग्रेस (आई) और सी. पी. आई. ने बाहर से समर्थन दिया, लेकिन वे इनकी सरकार में सम्मिलित नहीं हुए। इसके अतिरिक्त चौधरी चरण सिंह भारत के गृहमंत्री (कार्यकाल 24 मार्च 1977– 1 जुलाई 1978), उप–प्रधानमंत्री (कार्यकाल 24 मार्च 1977– 28 जुलाई 1979) और दो बार उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री भी रहे।

प्रारंभिक जीवनः

चौधरी चरण सिंह का जन्म 23 दिसम्बर, 1902 को उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले के नूरपुर ग्राम में एक मध्यम वर्गीय कृषक परिवार में हुआ था। इनका परिवार जाट पृष्ठभूमि वाला था। इनके पुरखे महाराजा नाहर सिंह ने 1857 की प्रथम क्रान्ति में विशेष योगदान दिया था। महाराजा नाहर सिंह बल्लभगढ़ के निवासी थे, जो कि वर्तमान में हरियाणा में आता है। राजा नाहर सिंह को दिल्ली के चाँदनी चौक में ब्रिटिश हुकूमत ने फाँसी पर चढ़ा दिया था।

तब अंग्रेजों के खिलाफ क्रान्ति की ज्वाला को अक्षुण बनाए रखने के लिए राजा नाहर सिह के समर्थक और चौधरी चरण सिंह के दादा जी उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिले के पूर्ववर्ती क्षेत्र में बस गए। चौधरी चरण सिंह को परिवार में शैक्षणिक वातावरण प्राप्त हुआ था। स्वयं इनका भी शिक्षा के प्रति अतिरिक्त रुझान रहा। चौधरी चरण सिंह के पिता चौधरी मीर सिंह चाहते थे कि उनका पुत्र शिक्षित होकर देश सेवा का कार्य करे।

उनकी प्राथमिक शिक्षा नूरपुर में ही हुई और उसके बाद मैट्रिकुलेशन के लिए उनका दाखिला मेरठ के सरकारी हाई स्कूल में करा दिया गया। सन 1923 में चौ० चरण सिंह ने विज्ञान विषय में स्नातक किया और दो वर्ष बाद सन 1925 में उन्होंने ने कला वर्ग में स्नातकोत्तर की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके पश्चात उन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से कानून की पढ़ाई की और फिर विधि की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद सन 1928 में गाजियाबाद में वकालत आरम्भ कर दी। वकालत के दौरान वे अपनी ईमानदारी, साफगोई और कर्तव्यनिष्ठा के लिए जाने जाते थे। चौधरी चरण सिंह उन्हीं मुकदमों को स्वीकार करते थे जिनमें मुवक्किल का पक्ष उन्हें न्यायपूर्ण प्रतीत होता था।

कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन (1929) के बाद उन्होंने गाजियाबाद में काग्रेस कमेटी का गठन किया और सन 1930 में सविनय अवज्ञा आन्दोलन के दौरान नमक कानून तोड़ने पर चरण सिंह को 6 महीने की सजा सुनाई गई। जेल से रिहा होने के बाद उन्होंने स्वयं को देश के स्वतन्त्रता संग्राम में पूर्ण रूप से समर्पित कर दिया। सन 1937 में मात्र 34 साल की उम्र में वे छपरौली (बागपत) से विधान सभा के लिए चुने गए और कृषकों के अधिकार की रक्षा के लिए विधानसभा में एक बिल पेश किया। यह बिल किसानों द्वारा पैदा की गयी फसतों के विपणन से सम्बंधित था। इसके बाद इस बिल को भारत के तमाम राज्यों ने अपनाया।

चौ० चरण सिंह का जन्म एक जाट परिवार में हुआ था। स्वाधीनता के समय उन्होंने राजनीति में प्रवेश किया। स्वतन्त्रता के पश्चात् वह राम मनोहर लोहिया के ग्रामीण सुधार आन्दोलन में लग गए। बाबूगढ़ छावनी के निकट नूरपुर गांव, तहसील हापुड़, जनपद गाजियाबाद, कमिश्नरी मेरठ में काली मिट्टी के अनगढ़ और फूस के छप्पर वाली झोपड़ी में 23 दिसम्बर, 1902 को आपका जन्म हुआ। चौधरी चरण सिंह के पिता चौधरी मीर सिंह ने अपने नैतिक मूल्यों को विरासत में चरण सिंह को सौंपा था। चरण सिंह के जन्म के 6 वर्ष बाद चौधरी गीर सिंह सपरिवार नूरपुर से जानी खुर्द गांव आकर बस गये थे।

1930 में गांधीजी द्वारा चलाये गये सविनय अवज्ञा आन्दोलन में नमक कानून तोड़ने का आव्हान किया, चरण सिंह ने गाजियाबाद की सीमा पर बहने वाली हिंडन नदी पर नमक बनाया था एवं 'डांडी मार्च' में भी भाग लिया। इस दौरान इन्हें 6 माह के लिए जेल भी जाना पड़ा। इसके बाद इन्होंने महात्मा गाँधी जी की छत्रछाया में खुद को स्वतन्त्रता की आँधी का हिस्सा बनाया 1940 के सत्याग्रह आन्दोलन में भी यह जेल गए उसके बाद 1941 में बाहर आये फरवरी 1937 में इन्हें विधानसभा के लिए चुना गया।

31 मार्च 1938 में इन्होने 'कृषि उत्पाद बाजार विधेयक' पेश किया यह विधेयक किसानों के हित में था, यह विधेयक सर्वप्रथम 1940 में पंजाब द्वारा अपनाया गया। आजादी के बाद, चौधरी चरण सिंह 1952 में उत्तरप्रदेश विधानसभा के लिए चुने गये। 31 माई 1938 में इन्होंने कृषि उत्पाद बाजार किसानों के हित में था, यह विधेयक सर्वप्रथम 1940 में पास करवाया। आपने 1939 में ही किसान को एक आरक्षण दिलाने का लेख लिखा था।

इससे स्पष्ट हो जाता है कि किसानों के बेदखली के अभिशाप से मुक्ति दिलाने हेतु भूमि उपयोग बिल कामदार का और

1956 में जमींदारी उन्मूलन अधिनियम पास करवाकर एक प्रशंसनीय कार्य किया था जो आपकी एक अनूठी मिशाल है। जो आज तक कोई किसान नेता नहीं कर पाया और आगे उम्मीद नहीं के बराबर है। आपने किसानों के साथ–साथ छात्र समाज को बनासाठी गोली के मिटाया सरकारी अधिकारियों से रिश्वतखोरी मिटाने, प्रशासन में कुशलता लाने और देश की गरीबी बेकारी हटाने के लिए अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया था।

सन् 1969 में उत्तर प्रदेश में विधानसभा के मध्यावधि चुनावों में 198 सीटों पर विजय प्राप्त करके 1970 में पुनः उत्तर प्रदेश के मुखामंत्री पद की शपथ ली और 1974 में लोकदल का गठन किया। 1975 में 29 अगस्त को इमरजेंसी के दौरान आपको गिरफ्तार करके जेल भेज दिया गया। 1970 में जनता पार्टी के गठन में मुख्य भूमिका निभाकर लोकसभा के लिए प्रथम बार निर्वाचित हुए और जनता पार्टी सरकार में आप गृहमंत्री बने। 30 जून 1978 को प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई के साथ मतभेद होने के कारण मंत्री मण्डल से त्याग पत्र दे दिया। जब वह देहरादून में चुनावी सभा को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने आम जनता से कहा था कि हमारी पार्टी ने सभी उम्मीदवारों को देख परखकर चुना है। अगर जनता में से किसी को ऐसा लगता है कि उनका कोई उम्मीदवार हाथ और लंगोट का कच्चा है तो उसे कभी दोबारा नहीं चुनना। ऐसा कभी किसी प्रधानमंत्री ने अपने उम्मीदवारों के लिए आज तक नहीं कहा। बड़ौत में सभा को संबोधित करने के बाद उनके पास शिक्षकों का एक दल पहुंचा। उन्होंने अपने–अपने ग्रेड के हिसाब से सैलरी बढ़ाने की बात कही। तब चौधरी जी ने पूछा कि आप कितने घंटे स्कूल में पढ़ाते हैं।

शिक्षकों का जवाब था कि 6 घंटे। तब उन्होंने शिक्षकों से कहा था देश का जवान आपसे कम सेलरी पर 24 घंटे ड्यूटी करता है। इसलिए 24 घंटे के हिसाब से आपकी सेतरी में कटौती कर देता हूं। उसके बाद सभी शिक्षक माफी मांगते हुए वहां से लौट आए थे। भारत में, चौधरी चरण सिंह का जन्मदिन 'राष्ट्रीय किसान दिवस' के रूप में मनाया जाता है। प्रत्येक वर्ष 23 दिसम्बर को भारत के पूर्व प्रधानमंत्री और किसान नेता चौधरी चरण सिंह के जन्मदिन के अवसर पर राष्ट्रीय किसान दिवस मनाया जाता है।

विचार:

– असली भारत गांवों में रहता है।

– अगर देश को उठाना है तो पुरुषार्थ करना होगा हम सब को पुरुषार्थ करना होगा में भी अपने आपको उसमें शामिल करता हूँ, मेरे सहयोगी मिनिस्टरों को, सबको शामिल करता हूँ हमको अनवरत् परिश्रम करना पड़ेगा तब जाके देश की तरक्की होगी।

– राष्ट्र तभी संपन्न हो सकता है जब उसके ग्रामीण क्षेत्र का उन्नयन किया गया हो तथा ग्रामीण क्षेत्र की कृषि आय अधिक हो।

– किसानों की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होगी तब तक देश की प्रगति संभव नहीं है,

– किसानों की दशा सुधरेगी तो देश सुधरेगा।

– किसानों की क्रय शक्ति नहीं बढ़ती तब तक औधोगिक उत्पादों की खपत भी संभव नहीं है.

– भ्रष्टाचार की कोई सीमा नहीं है जिस देश के लोग भ्रष्ट होंगे वो देश कभी, चाहे कोई भी लीडर आ जाये, चाहे कितना ही अच्छा प्रोग्राम चलाओ वो देश तरक्की नहीं कर सकता।

– हरिजन लोग, आदिवासी लोग, भूमिहीन लोग, बेरोजगार लोग या जिनके पास कम रोजगार है और अपने देश के 50 प्रतिशत किसान जिनके पास केवल 1 हेक्टेयर से कम जमीन है इन सबकी तरफ सरकार का विशेष ध्यान होगा।

– सभी पिछड़ी जातियों अनुसूचित जातियों, कमजोर वर्गों, अल्पसंख्यकों, अनुसूचित जनजातियों को अपने अधिकतम विकास के लिये पूरी सुरक्षा एवं सहायता सुनिश्चित की जाएगी

– किसान इस देश का मालिक है, परन्तु वह अपनी ताकत को भूल बैठा है

– देश की समृद्धि का रास्ता गांवों के खेतों एवं खलिहानों से होकर गुजरता है।

चौधरी चरण सिंह से जुड़ी कुछ रोचक जानकारियाँ

- क्या चौधरी चरण सिंह धूम्रपान करते थे ? नहीं
- क्या चौधरी चरण सिंह शराब पीते थे ? नहीं
- चरण सिंह का जन्म उत्तर प्रदेश के एक जाट परिवार में हुआ था।
- चरण सिंह के जन्म के 6 वर्ष बाद उनके पिता सपरिवार नूरपुर के जानी खुर्द के निकट भूपगढ़ी में जाकर बस गए।
- कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में पूर्ण स्वराज का प्रस्ताव पारित होने के पश्चात् युवा चौधरी चरण सिंह ने राजनीति में जाने का निश्चय किया।
- वर्ष 1929 में, वह भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन में शामिल हुए और गाजियाबाद में कांग्रेस पार्टी का गठन किया।
- वर्ष 1930 में, उन्होंने महात्मा गांधी के द्वारा चलाए गए 'सविनय अवज्ञा आन्दोलन' में प्रतिभाग लेते हुए, नमक कानून तोड़ने का निर्णय किया।
- वर्ष 1940 में, सत्याग्रह के दौरान उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और अक्टूबर 1941 को रिहा कर दिया गया।
- चौधरी चरण सिंह ने नेहरु की सोवियत पद्धति पर आधारित आर्थिक सुधारों का विरोध किया, क्योंकि उनका

मानना था कि सहकारी पद्धति से की गई, खेती भारत में सफल नहीं हो सकती।

- 9 अगस्त 1942 को, उन्होंने 'भारत छोड़ो' व अगस्त क्रांति के दौरान गाजियाबाद, हापुड़, मेरठ, मवाना, सरधना, बुलन्दशहर के गाँवों में गुप्त रूप से क्रांतिकारीयों के संगठन को तैयार करना शुरू किया।

चौधरी चरण सिंह का निधन 1987 में हुआ दिल्ली में यमुना के किनारे उनकी समाधि है जिसे किसान घाट के तौर पर जाना जाता है। उनके निधन के बाद लोकदल का नया अध्यक्ष उनके बेटे अजित सिह को बनाया गया, इसी लोकदल के सहारे उनके पोते आज राजनीति के मैदान में है। देश में अनेक सरकारी संस्थान चौधरी चरण सिंह के नाम से हैं। लखनऊ का अमौसी एयरपोर्ट को भी चौधरी करण सिंह अंतरराट्रीय एयरपोर्ट कहा जाता है। इसके अलावा चौधरी चरण सिंह कृषि विश्वविद्यालय हिसार भी इनके नाम से जाना जाता है।

राजा महेन्द्र प्रताप एक स्वतन्त्रता सेनानी, क्रांतिकारी-पत्रकार वह एक महान देशभक्त दानवीर भी थे।

– बी.एस. गिल, सचिव
जाट सभा

राजा महेन्द्र प्रताप भारत के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, पत्रकार, लेखक, क्रांतिकारी, समाज सुधारक और महान दानवीर थे। वे 'आर्यन पेशवा' के नाम से प्रसिद्ध थे और भारत की अंतिम सरकार के अध्यक्ष थे। यह सरकार प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान बनी थी और भारत के बाहर से संचालित हुई थी। उन्होने द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान 1940 में जापान में 'भारतीय कार्यकारी बोर्ड' (Euecutive Board of India) की स्थापना की थी। अपने कॉलेज के साथियों के साथ मिलकर उन्होने सन 1911 में बाल्कन युद्ध में भी भाग लिया। उनकी सेवाओं को याद करते हुए भारत सरकार ने उनकी स्मृति में एक डाक टिकट जारी किया है।

महेन्द्र प्रताप का जन्म 1 दिसम्बर 1886 को एक जाट परिवार में हुआ था जो मुरसान रियासत के शासक थे। यह रियासत वर्तमान उत्तर प्रदेश के हाथरस जिले में थी। वे राजा घनश्याम सिंह के तृतीय पुत्र थे। जब वे 3 वर्ष के थे तब हाथरस के राजा हरनारायण सिंह ने उन्हें पुत्र के रूप में गोद ले लिया। 1902 में उनका विवाह धूम–धाम के साथ बलवीर कौर से हुआ था जो जीन्द रियासत के राजा की लड़की थीं। विवाह के समय वे कॉलेज की शिक्षा ले रहे थे।

हाथरस के कायस्थ राजा दयाराम ने 1817 में अंग्रेजों से भीषण युद्ध किया। मुरसान के जाट राजा ने भी युद्ध में जमकर साथ दिया। अंग्रेजों ने दयाराम को बंदी बना लिया। 1841 में दयाराम का देहान्त हो गया। उनके पुत्र गोविन्दसिंह गद्दी पर बैठे। उनके कोई सन्तान नही थी। राजा गोविन्दसिंह की 1861 में मृत्यु हो गई। संतान न होने पर वे अपनी पत्नी को पुत्र गोद लेने का अधिकार दे गय थे। अतः रानी साहबकुँवरी ने जटोई के राजा रूपसिंह के पुत्र हरनारायण सिंह को गोद ले लिया। अपने दत्तक पुत्र के साथ रानी अपने महल वृन्दावन में रहने लगी। राजा हरनारायन को कोई पुत्र नहीं था। अतः उन्होंने मुरसान के राजा घनश्यामसिंह के तीसरे पुत्र महेन्द्र प्रताप को गोद ले लिया। इस प्रकार महेन्द्र प्रताप मुरसान राज्य को छोड़कर हाथरस राज्य के राजा बने। हाथरस राज्य का वृन्दावन में विशाल महल है उसमें ही महेन्द्र प्रताप का शैशव काल बीता। बड़ी सुख सुविधाएँ मिली। महेन्द्र प्रताप ने अलीगढ़ में सैयद खाँ द्वारा स्थापित स्कूल में बी. ए. तक शिक्षा ली।

उनके 1909 में पुत्री हुई–भक्ति, 1913 में पुत्र हुआ–प्रेम। देश–विदेश की खूब यात्राएँ कीं। 1906 में जीन्द के महाराजा की इच्छा के विरुद्ध राजा महेन्द्र प्रताप ने कलकत्ता में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में भाग लिया और वहाँ से स्वदेशी के रंग में रंगकर लौटे।

1909 में वृन्दावन में प्रेम महाविद्यालय की स्थापना की जो तकनीकी शिक्षा के लिए भारत में प्रथम केन्द्र था। मदनमोहन मालवीय इसके उद्घाटन समारोह में उपस्थित रहे। राजा महेन्द्र प्रताप ने ट्रस्ट बनवाये और अपने पांच गाँव, वृन्दावन का राजमहल और चल संपत्ति का दान दे दिया। इसीलिए वह महान देशभक्त दानवीर बन गए।

उनकी .ष्टि विशाल थी। वे जाति, वर्ग, रंग, देश आदि के द्वारा मानवता को विभक्त करना घोर अन्याय, पाप और अत्याचार मानते थे। ब्राह्मण–भंगी को भेद बुद्धि से देखने के पक्ष में नहीं थे। वृन्दावन में ही एक विशाल फलवाले उद्यान को जो 80 एकड़ में था, 1911 में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश को दान में दे दिया। जिसमें आर्य समाज गुरुकुल है और राष्ट्रीय विश्वविद्यालय भी है।

प्रथम विश्वयुद्ध से लाभ उठाकर भारत को आजादी दिलवाने के पक्के इरादे से वे विदेश गये। इसके पहले 'निर्बल सेवक'एक समाचार–पत्र देहरादून से राजा साहेब निकालते थे। उसमें जर्मन के पक्ष में लिखे लेख के कारण उन पर 500 रुपये का दण्ड किया गया जिसे उन्होंने भर तो दिया लेकिन देश को आजाद कराने की उनकी इच्छा प्रबलतम हो गई। विदेश जाने

के लिए पासपोर्ट नहीं मिला। मैसर्स थौमस कुक एण्ड सन्ज के मालिक बिना पासपोर्ट के अपनी कम्पनी के पी. एण्ड ओ स्टीमर द्वारा राजा महेन्द्र प्रताप और स्वामी श्रद्धानंद के ज्येष्ठ पुत्र हरिचंद्र को इंग्लैण्ड ले गया। उसके बाद जर्मनी के शासक कैसर से भेंट की। उन्हें आजादी में हर संभव सहायता देने का वचन दिया। वहाँ से वह अफगानिस्तान गये। बुडापेस्ट, बुल्गारिया, टर्की होकर हैरत पहुँचे। अफगान के बादशाह से मुलाकात की और वहीं से 1 दिसम्बर 1915 में काबुल से भारत के लिए अस्थाई सरकार की घोषणा की जिसके राष्ट्रपति स्वयं तथा प्रधानमंत्री मौलाना बरकतुल्ला खाँ बने। स्वर्ण–पट्टी पर लिखा सूचनापत्र रूस भेजा गया। अफगानिस्तान ने अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया तभी वे रूस गये और लेनिन से मिले। परंतु लेनिन ने कोई सहायता नहीं की। 1920 से 1946 तक विदेशों में भ्रमण करते रहे। विश्व मैत्री संघ की स्थापना की। 1946 में भारत लौटे। सरदार पटेल की बेटी मणिबेन उनको लेने कलकत्ता हवाई अड्डे गईं। वे संसद–सदस्य भी रहे।

ब्रिटिश विरोधी ताकतों में इनके आंदोलन का समर्थन किया। ये भारत में विदेशी शासन के लिए एक ब्रिटिश सरकार ने इनके सिर पर इनाम घोषित कर दिया, इनकी पूरी संपत्ति कुर्क कर ली और इन्हें भगोड़ा घोषित कर दिया। एक बड़ा खतरा बन गए थे। 1925 में ये जापान गए। इन्होंने 1929 में 'वर्ल्ड फेडरेशन मासिक पत्रिका' प्रकाशित की। राजा महेंद्र प्रताप ने भारत को मुक्त करने के लिए विश्व युद्ध की स्थितियों का उपयोग करने की पूरी कोशिश की। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान वह जापान के टोक्यों में रहे और भारत को ब्रिटिश शासन से मुक्त करने के लिए वर्ल्ड फेडरेशन सेंटर से अपना आंदोलन जारी रखा। उन्होंने 1940 में द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जापान में भारत के कार्यकारी बोर्ड का गठन किया। अंत में ब्रिटिश सरकार को राजा महेंद्र प्रताप के सामने घुटने टेकने पड़े और उन्हें सम्मान के साथ टोक्यों से भारत आने की अनुमति मिल गई।।

भारतीय इतिहास में राजा महेंद्र प्रताप के योगदान का इतिहासकारों द्वारा ठीक से मूल्यांकन नहीं किया गया है।

राजा महेंद्र प्रताप को 1932 में शांति के लिए नोबेल पुरस्कार के लिए नामांकित किया गया था। लेकिन उस साल पुरस्कार की घोषणा नहीं की गई थी और इस पुरस्कार राशि को पुरस्कार खंड के एक विशेष खजाने में बांट दिया गया था।

सन् 1957 में राजा महेन्द्र प्रताप ने लोकसभा चुनाव में मथुरा लोकसभा की सीट से निर्दलीय सांसद का चुनाव लड़ा था जिसमें इन्होंने प्रचंड जीत हासिल की थी और इस चुनाव में इन्होंने भारतीय जन संघ पार्टी के उम्मीदवार (भारत के भावी प्रधानमंत्री) अटल बिहारी वाजपेयी की जमानत तक जब्त करा दी थी।

भारतीय डाक और दुरसंचार विभाग ने 15 अगस्त 1979 को स्वतंत्रता की वर्षगांठ पर 30 पैसे मूल्यवर्ग का स्मारक डाक टिकट जारी कर भारत माता के एक कांतिकारी सपूत की स्मृति को नमन किया था।

29 अप्रैल 1979 में 93 वर्ष की आयु में उनका देहान्त हो गया। मार्च 2021 में उत्तर प्रदेश सरकार ने उनके नाम पर अलीगढ़ में एक विश्वविद्यालय स्थापित करने की घोषणा की है।

हमारी सभी की प्रार्थना है कि उनको वर्तमान सरकार शांति के लिए नोबल पुरस्कार से नवाजने की कृपा करें। यही उनको सच्ची श्रद्धाजंली है।

दानवीर सेठ छाजू राम देश भगत एवं एक युग पुरुष भी थे

– लक्ष्मण सिंह फौगाट

चौधरी छाजू राम का नाम सेठ दानवीर छाजूराम क्यों पड़ा जबकि चौधरी छाजू राम का जन्म एक गरीब किसान जाट परिवार में हुआ था। कहानी ऐसे बनी की गांव में पढ़ा लिखा होने के कारण बच्चों को ट्यूशन पर पढ़ाते थे जिनमें बंगाली इंजीनियर का लड़का भी पड़ता था। गांव वालों से 50 पैसे प्रति बच्चा और इंजीनियर से 1 रुपये लेता था बंगाली इंजीनियर ने कोलकाता पहुंचने पर चौधरी छाजू राम को कोलकाता बुला लिया जहां पर छाजू राम ट्यूशन पढ़ाने का काम करने लगे हैं उनकी अंग्रेजी अच्छी होने के कारण वहां के बड़े–बड़े व्यापारी अपनी चिट्ठी पत्री व जवाब आदि का कार्य छाजू राम से कराने लग गए हैं जिसके कारण छाजूराम के संबंध बड़े–बड़े मारवाड़ी सेठों के साथ हो गये, इसलिये छाजू रामजूट का व्यापार करने लग गये और बड़े–बड़े व्यापारियों से संबंध होने के कारण वे जूट के अंतरराष्ट्रीय ट्रेड व्यापारी बन गये। वह अच्छे कार्यों के लिए दान भी देने लग गये।इससे बड़े–बड़े व्यापारियों को जलन होने लगी। कलकता के सभी व्यापारियों ने फैसला किया कि वह सभी मिल कर कोलकाता में व्यापारी मंडल का एक बड़ा भवन बनवाएंगे और छाजू राम से ज्यादा दान देंगे और उसको नीचा दिखायेंगे लेकिन जिस समय व्यापार भवन की भूमि का पूजन हो रहा था तो वहां पर छाजू राम भी आ गए और उन्होंने वहीं पर घोषणा की कि इस व्यपार भवन के निर्माण का सारा खर्च मैं स्वयं करूगा। तभी से छाजू राम सेठ दानवीर कहलाने लग गए। वैसे उन्होंने कई शहरों में शिक्षा संस्थान खुलवाई स्कूल कॉलेज आदि और देशभक्ति के लिए संघर्षरत सुभाष चंद्र बोस, सरदार पटेल, महात्मा गांधी आदि

अन्य की धन सहायता की। उनके साथ–साथ में देश भगत तथा युग पुरुष कहलाने लगे।

कुछ लोग इतिहास लिखते हैं. कुछ इतिहास बनाते हैं और कुछ लोग स्वंय इतिहास बन जाते हैं। समय का चक्र हमेशा अपनी गति से घूमता रहता है। युग बदलते हैं, तारीखे बदलती हैं, लेकिन कुछ विरले लोग ऐसे भी होते हैं, जो एक युगपुरुष के रूप में याद किये जाते हैं।

एक ऐसे ही युगपुरुष थे सेठ दानवीर व देशभक्त छाजूराम जी, जिन्हें क्षत्रियों का भामाशाह कहा जाता है। फर्श से उठाकर अर्श तक पहुँचने वाला यह महामानव दानवीरता के क्षेत्र में सूरज–चाँद की तरह जगमगाया, वहीं दुखी मानवता के आँसू पोंछने के लिए इसने अपना सर्वश्व अर्पित करने से भी परहेज नहीं किया।

आगे के लेख पर बढ़ने से पहले, इस कविता के माध्यम से लेख का निचोड़ः

भामाशाहों के भामाशाह दानवीर सेठ चौधरी छाजूराम
चौधरी छोटूराम के धर्म पिता तुम उनका फरिश्ता–ए–रोशनाई थे।
चौधरी सेठ छाजूराम जी हरियाणा के तीन लालो की तरह,
इसके तीन रामों के रहनुमाई थे।

भामाशाहों के भामाशाह दानवीरसेठ छाजूराम, आप गजब शाही थे,
जब उदय हो चले अलखपुरा से, जा छाये आसमान–ए–कलकत्ताई थे।

जी डी बिड़ला लाला लाजपतराय रहे किरायेदार, जो इन्सा जुनुनाई थे,
कलकते के सबसे बड़े शेपरहोल्डर आप, साहूकारों के अगवाही थे।

भगत सिंह को मिली पनाह जिनके यहाँ, वो खुदा–ए–रहबराई थे,
नेताजी सुभाष को दी आर्थिक सहायता, जर्मनी की राह लगाई थे।

दानवीरता की टक्कर हुई ऐसी कई भामाशाह अकेले में सम्माई थे,
बाढ़–अकाल–बीमारी–लाचारी–गरीबी में दिए जनता बीच दिखाई थे।

लाहौर से कलकत्ता तक, शिक्षा के मंदिरों की दिए लाईन लगाई थे,
कोम का इतिहास लिखवाया कानूनगों से, गजब
आशिक–ए–कोमाई थे।

सेठों के सेठ जो भारत–देश की शान, किसके दूध की अंगड़ाई पे
जिंदगी राह लग जाए, तुझसे रोशनी ऐसी पाई ओ दादी माई थे।

हरियाणा में तीन लालों की तरह तीन राम भी हुए थे, जिनमें से एक थे देश के महान परोपकारी सेठ, शिक्षित समाज सेवक, दानवीर, देशभक्त चौधरी छाजूराम हरियाणा में ही नहीं, बल्कि भारतवर्ष में भी अपनी एक विशेष पहचान रखते है। जहाँ आधुनिक हरियाणा में तीन लाल (देवीलाल, बंसीलाल, भजनलाल) हुए और हरियाणा एवं देश को एक नई राह दिखाई, वहीं एक समय ऐसा भी था जब तीन राम (छाजूराम, छोटूराम नेकीराम) जैसे महान पुरुषों ने समाज में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी, वो भी उस समय जब लोगो को कोई भी आशा की किरण दिखाई नहीं दे रही थी या यूँ कह लीजिये कि उनकी आशाओं का सूरज पूरी तरह से अस्त हो चुका था। इस अंधकारमयी समाज में उजाला लाने एवं अंधकार को दूर करने और लोगों में नई तरह की आशा जगाने का काम इन तीन महापुरुषों ने किया। और ऐसी भूमिका निभाने वाले इन तीनों में से एक और सबसे अग्रणी थे श्रद्धेय दानवीर सेठ छाजूराम जी। इन्होंने जो योगदान समाज में दिया उसी की अमिट छाप है कि आज हम एक स्वच्छ वातावरण में रह रहे है।

देशप्रेम व सरदार भगत सिंह को पनाहः

सेठ छाजूराम दानवीर ही नहीं बल्कि वो उच्चकोटि के देशभक्त भी थे उनकी आँखों में भी भारत की आजादी का सपना था। वो भी भारत को आजाद देखना चाहते थे जब 17 दिसम्बर, 1928 को सरदार भगतसिंह ने अग्रेज अधिकारी सांडर्स की गोली मारकर हत्या कर दी हो तो भाभी दुर्गा उनके पुत्र को साथ लेकर भगतसिंह पुलिस की आँखों में धूल झोकते हुए रेलगाड़ी से लाहौर से कलकता पहुंचे और कलकत्ता में वे सेठ छाजूराम की कोठी पर ठहरे और सेठ साहिब की धर्मपत्नी वीरांगना लक्ष्मी देवी जी ने उनका स्वागत किया। यहाँ भगत सिंह लगभग ढाई महीने तक रहे, जिसकी उस समय कल्पना करना भी संभव नहीं था, लेकिन सेठ जी के देशप्रेम के कारण यह सम्भव हो पाया उन्होंने देश की आजादी में सबसे बड़ी आर्थिक सहायता का योगदान दिया। वे कहा करते थे कि देश को आजाद करवाने में उनकी पूरी सम्पति लग जाए, लेकिन देश आजाद होना चाहिये और अपने हाथों से भोजन बनाकर खिलाया पंडित मोतीलाल नेहरू नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, लाला लाजपत राय, महात्मा गांधी द्वारा मनोनीत कांग्रेस अध्यक्ष सहित जाने कितने ही नेताओं और क्रांतिकारियों को देश की आजादी के लिए भारी धनअदा किया। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जब जर्मनी जा रहे थे तो उन्होंने भी चौधरी छाजूराम जी से आर्थिक सहायता ली थी। सामाजिक बुराईयों के खिलाफ भी बौधरी छाजूराम जी ने एक लम्बी लड़ाई लड़ी। बाल–विवाह व अशिक्षा के वो घोर विरोधी थे।

उनका मन कभी भी राजनीति में नहीं लगा, लेकिन फिर भी छोटूराम के कहने पर संयुक्त पंजाब में वे 1927 में एम.एल.सी भी रहे।

विशाल व्यापारिक विरासत और वारिसः

चौधरी छाजूराम के बड़े पुत्र साजन कुमार बहुत ही होनहार व व्यवहार कुशल थे। वहीं वो चौधरी साहब का व्यापार संभालने में भी माहिर थे, लेकिन 27 सितंबर 1930 को उनके लड़के की अकस्मात मौत होने से हादसे ने चौधरी साहब को अंदर से तोड़ दिया। लगता था कि वो वक्त से पहले ही बुढ़े हो गए थे। और फिर 7 अप्रैत 1943 को आप महान आभा संसार को छोड़, भगवान के दरबार को प्रस्थान कर गये। माना जाता है कि सेठ जी और उनके पुत्र सज्जन की मृत्यु के पश्चात इतनी विशाल विरासत को कोई नहीं संभाल पाया। जो मरणोपरांत हकदार थे, वह उन्हें नहीं मिला।

Brigadier Hoshiar Singh Rathi, IOM, VSM

Brigadier Hoshiar Singh Rathi was born on December 16, 1916, in village Sankhol, near Bahadurgarh, in a Rathee Jat family. This village was part of Rohtak district in undivided Punjab. Now it is part of Jhajjar district of Haryana.

He joined the Rajputana Rifles as a recruit in October 1934 when he was barely 18 years old. He was promoted to the rank of Jemadar in December 1940. As a Junior Commissioned Officer [when known as VCO] he served with distinction in the Middle East with 4th Battalion [Outram's]. The Rajputana. Rifles won the IOM, IDSM and CROIX DE GUERRE [French Decoration] for bravery on the Battle field. He was twice mentioned in despatches for meritorious service. In 1941 he was selected for a commission and passed out from the Indian Military Academy, Dehradun.

When the Chinese began their massive invasion of NEFA and the situation over there was precarious, the forty six years old Brigadier Hoshiar Singh was selected at a short notice to take over the command of 62 Infantry Brigade at Sela Pass on 28 October 1962. Under his able leadership, the Brigade held up the enemy's advance for three days. It was only on receipt of orders from higher headquarters, that he reluctantly pulled out his Brigade and started the withdrawal. In the meantime, the Chinese had declared an unilateral ceasefire and the Brigadier and his party were withdrawing they were treacherously ambushed by the Chinese on 27 November 1962 and the gallant Brigadier fell to Chinese bullets.

Brigadier Hoshiar Singh was commended for his bravery in war.

After his martyrdom, the then Prime Minister of India, Jawaharlal Nehru, along with then Chief Minister of Punjab, Sardar Pratap Singh Kairon and Senior Army Officers, personally went to Sankhol village to pay homage to the departed martyr and convey their condolences to his parents. On the first death anniversary, Smt Indira Gandhi later on Prime Minister of India also came to meet his family in the village.

There is a stadium in Bahadurgarh in his name and a bust was unveiled by Lt. Gen. R. S. Kadian (Retd) on 27-Nov-2012. There is also a Metro terminus Station on the green line of Delhi Metro and located at Bahadurgarh in his name.

'जाट जी' और 'जाट देवता' टाइटल को बचाने का संकट!

– फूल मलिक

अरे मखा, मैं न्यूं कहूँ पूरे हिन्दू धर्म में जाट अकेली ऐसी कौम है जिसकी, वो ब्राह्मण जो बाकी की हिन्दू कौमों को सिर्फ दिशा–निर्देशों से चलाता आया, वो जाट की स्तुति करता आया है। ब्राह्मण ने अपने हाथों घड़े तथाकथित क्षत्रियों–वैश्यों की इतनी प्रसंशा नहीं करी जितनी जाट की करी। आधुनिक काल का उदाहरण दूँ तो सम्पूर्ण ब्राह्मण समाज के निर्देश पे 1875 में रचित गुजरात वाले ब्राह्मण 'दयानंद सरस्वती' का 'सत्यार्थ प्रकाश' उठा के पढ़ लो, 'जाट जी' लिख के जाट के गुणों की स्तुति तो करी ही करी, साथ ही जाट सामाजिक मान्यताओं की प्रशंसा पर आधारित पूरी किताब यानी 'सत्यार्थ प्रकाश' तक लिखी।

दूसरा आधुनिक काल का उदाहरण हाल ही में 'भारत रत्न' से नवाजे गए पंडित मदन–मोहन मालवीय द्वारा जब 1932 में दिल्ली बिड़ला मंदिर की नींव रखने हेतु प्रस्ताव रखा गया कि वो ही राजा इस मंदिर की नींव रखेगा:

1) जिसका वंश उच्च कोटि का हो!
2) जिसका चरित्र आदर्श हो!
3) जो शराब व मांस का सेवन ना करता हो!
4) जिसने एक से अधिक विवाह ना किये हों!
5) जिसके वंश ने मुगलों को अपनी लड़की ना दी हो!
6) जिसके दरबार में रंडियाँ ना नाचती हों!

इस प्रस्ताव को सुनकर देश के कौनों–कौनों के रजवाड़ों से आये राजाओं–राणाओं ने अपनी गर्दनें झुका ली। तब धौलपुर नरेश महाराजा उदयभानु सिंह राणा अपनी जगह से उठे जो इन सभी 6 शर्तों पर खरे पाये गए। और मालवीय जी ने यह कहते हुए कि 'जाट नरेश धौलपुर पूरे भारतवर्ष की शान हैं', राणा जी से दिल्ली बिड़ला मंदिर की नींव का पत्थर रखवाया। आज भी इस मंदिर के प्रांगण में राणा जी की मूर्ती व संबंधित शिलालेख स्थापित हैं। तो

सोचने की बात है कि जो कौम उच्च कोटि के मंदिरों की नींव रखती आई हो वह मंदिर में प्रवेश की मनाही वाली शूद्र की श्रेणी तो हो नहीं सकती। हालाँकि लेखक वर्ण–व्यवस्था और जाति–व्यवस्था का घोर विरोधी है परन्तु क्योंकि यह लेख इन्हीं पहलुओं बारे है तो यह लिखने हेतु जरूरी कारक के रूप में लिखा है।

ऐसे अद्वितीय व् अद्भुत उदाहरण अपनी जलन/द्वेष/प्रतिस्पर्धा शांत करने हेतु जाटों को कभी चांडाल, कभी शूद्र तो कभी लुटेरे कहने वालों के मुंह पे तमाचा मार देते हैं। अतः जिसको उच्च कोटि का ब्राह्मण लिखित और सम्बोधन में 'जी', 'देवता' और 'देश की शान' कहके सम्बोधित किया हो वो कौम भला शूद्र या चांडाल कैसे हो सकती है? सवाल ही पैदा नहीं होता। हालाँकि जाट का इतिहास रहा है कि वो अपनी स्वछंद मति के शब्द को अंतिम मानता आया है, जिसकी कि अपनी वाजिब वजहें भी रही हैं, परन्तु यह भी सच है कि ब्राह्मण ने जाट को 'जी' भी कहा है और 'देवता' भी।

एक बार मेरे को एक तथाकथित क्षत्रिय ने उसके दो परम्परागत एंटी–जाट यारों के सिखाये पे (वैसे सामान्य परिस्थिति में वो अच्छा और साफ दिल का दोस्त होता था) 'घुटनों में अक्ल वाला' बोल दिया। तो मैंने उसको तपाक से जवाब दिया था, 'मखा सुन, जिनके चरणों में तुम अपनी अक्ल गिरवी रखते हो ना, वो हमें लिखित में 'जाट जी' और 'जाट देवता' कहते रहे हैं।' इससे हिसाब लगा ले अगर तेरे अनुसार हमारी अक्ल घुटनों में है तो फिर तेरी तो तेरे तलवे भी छोड़ चुकी। जवाब सुनते ही गुम गया और उसको ऐसा बोलने के लिए उकसाने वाले उसके आजू–बाजू खड़े अचम्भित व शब्दरहित।

लगे हाथ एक पहरे में चांडाल, शूद्र और लुटेरे शब्दों का भी हिसाब कर दूँ। कई लोग अपनी कुंठा को शांत करने हेतु चचनामा का उदाहरण उठा लाते हैं कि चचनामा में जाटों को चांडाल कहा गया है। अरे भाई जो मंत्री होते हुए धोखे से जाट राजा को मार, उसकी रियासत हथिया कर राजा बना हो वो भला फिर जाट की तारीफ कैसे कर देगा? वो तो घृणा वा दुश्मनीवश चांडाल ही कहेगा ना? फिर तर्क देने लग जाते हैं कि जाटों ने आरक्षण लेने के लिए ऐसे तथ्य कोर्ट में क्यों रखे? अरे भाई कोर्ट में रखे तो यह कहने को नहीं रखे कि हम चांडाल थे, अपितु यह बताने को रखे कि इतिहास में हमने क्या–क्या धोखे और दंश झेले हैं। अब फिर कुछ को चांडाल और शूद्र का बाण जब फैल होता दीखता है तो 'लुटेरे' शब्द उठा लाता है। अरे भाई ऐसा कहना ही है तो हमको लुटेरे मत कहो, 'लुटेरों के लुटेरे' कहो! पूछो क्यों? अमां मियां, जो विश्व के महानतम लुटेरों जैसे कि सोमनाथ मंदिर के खजाने को लूटने वाले लुटेरे महमूद गजनवी की लूट को सिंध में ही लूट लेवें, देश के धन और शान को देश में ही रोक, विदेश जाने के कलंक से बचावें, तो वो तो फिर 'लुटेरों के लुटेरे' हुए ना? और समाजशास्त्र में लुटेरों के लुटेरे को मसीहा अथवा रोबिन हुड केटेगरी बोला जाता है। और ऐसे–ऐसे कारनामों की वजह से ही तो ब्राह्मण ने जाट को जाट देवता कहा, क्योंकि जिस खजाने को लुटने से खुद सोमनाथ देवता नहीं बचा सके, उसको जाट–देवताओं ने लुटेरे से छीन बचाया और देश–कौम–धर्म की लाज की रक्षा करी।

जोड़ते चलूँ कि यह कारनामा सिंध में औजस्वी दादावीर बाला जाट–देवता जी महाराज की नेतृत्व वाली खाप आर्मी ने धाड़ (धाड़ वही युद्ध–कला है जिसको हिंदी में गुर्रिल्लावार कहते हैं, जिसको मराठों और हैदराबादियों ने जाटों से सीखा और जिसको जाट जब सिख बने तो सिख धर्म में साथ ले गए) लगा के किया था। धाड़ के नाम पर आज भी हरयाणा में कहावत चलती है कि फलानि–धकड़ी बात 'रै के धाड़ पड़गी' या 'के धाड़ मारै सै'।

परन्तु दुःख तो आज इन अंधभक्त बने जाटों को देख के होता है कि जिनके पुरखे खुद जिन्दे देवता कहलाते थे और जिनसे फंडी–पाखंडी–आडंबरी इतना भय खाते थे कि उनकी धरती पे पाखंड फैलाने की तो बात बहुत दूर की अपितु जाट को 'जाट जी' और 'जाट देवता' कहके बुलाते थे, आज उन्हीं जाटों के वंशज कैसे वशीभूत हुए अविवेकी बन अज्ञानी–अधर्मियों की तरह इनके इशारों पे टूल रहे हैं। और शहरी जाट तो इस मामले में ग्रामीणों से भी दो चंदे अगाऊ कूदे पड़े हैं।

खापलैंड के तमाम शहरों के जाट घरों में इक्का–दुक्का को छोड़, क्या मजाल जो एक भी घर ऐसा बचा हो कि जिसके यहाँ माता–मसानी पीढ़ा–चौकी लाएं/लगाएं ना बैठी/पसरी पड़ी हो। वैसे तो कहने को राजी हुए रहेंगे कि म्हारै तो जी आदमी–उदमी किमें ना मानते इन पाखंडां नैं, बस यें लुगाई–पताई ना मानती। मानती किसी ना उनके साथ बैठ के कभी खुद की जाति के टाइटल रहे 'जाट जी' और 'जाट देवता' जैसी बातों का कारण समेत जिक्र करो, उनको शुद्ध जाट सभ्यता और मान्यताओं बारे अवगत करवाओ तो कौन नहीं मानेगी?

याद रखना होगा जाट कौम के युवान और अनुभवी दोनों को, अगर हमें 'जाट जी' और 'जाट देवता' बने रहना

है तो अपने पुरखों की हस्ती को याद करना होगा, याद रखना होगा, उसको जिन्दा रखना होगा। जाट का धर्म के साथ तभी रिश्ता सुलभ है जब तक जाट धर्म वालों के लिए 'जाट जी' और 'जिन्दा देवता' है। जिस दिन या जब–जब इन टाइटलों को छोड़ या भूल इनके वशीभूत या अभिभूत हुए, उस दिन सचली (असली) के भूत बना दिए जाओगे और समाज की क्रूरतम जाति बनने और कहलाने के ढर्रे पर ढकेल दिए जाओगे। और जो आज के जाट के हालातों को जानता है वो मेरी भूत वाली पंक्ति से सहमत होयेगा।

चलते–चलते यह और कहूँगा कि धरती पर माँ के सिवाय (आपकी खुद की बीवी ना आने तक, उसके आने के बाद माँ की भी गारंटी नहीं) कोई भी आपकी प्रसंशा, अनुसंशा बिना स्वार्थ के नहीं करता। वह ऐसा या तो बदले में कुछ चाहने हेतु करता है या आपके जरिये अपनी कोई स्वार्थ सिद्धि करता है। इसलिए उसकी प्रशंसा को तो स्वीकार करो परन्तु उसका शिकार कभी मत बनो। और यह बात जिस संदर्भ में मैंने कही है मेरी इस बात को मंडी–फंडी और जाट के ऐतिहासिक रिलेशन को जानने वाला अच्छे से समझता है।

इंसान और जानवर का फर्क बना रहे तो बेहतर

– अक्षय शुक्ला

दिमाग तो सबको मिला है, लेकिन सोचने–समझने की शक्ति ही है, जो इंसान को जानवर से अलग करती है। इसके सहारे ही हम सही और गलत का भेद कर पाते हैं। बुद्धि भ्रष्ट हो जाए तो मनुष्य को जानवर बनते भी देर नहीं लगती। इन दिनों कुछ ऐसी ही बहस फिल्म एनिमल को लेकर छिड़ी हुई है। सोचने–समझने की शक्ति के बावजूद फिल्म का हीरो जानवर जैसे बर्ताव पर उतारू हो जाता है। समाज का एक पक्ष उसके बर्ताव को तमाम तर्कों के साथ सही ठहरा रहा है तो दूसरा वर्ग एक जानवर रूपी इंसान को नायक की तरह दिखाने पर सवाल उठा रहा है।

विरोध करने वालों की आपत्ति इस बात पर है कि इतने हिंसक शख्स को नायक के रूप में पेश कर डायरेक्टर आखिर क्या जताना चाहता है। बाजीगर और डर जैसी फिल्मों में भी हीरो को नेगेटिव शेड्स में दिखाया गया था। एक तरफ अपने प्रतिशोध के लिए वह मासूम लड़की को प्रेम जाल में फंसाकर उसकी जान ले लेता है तो दूसरी तरफ एकतरफा प्रेम में मरने–मारने पर उतारू हो जाता है। लेकिन उन फिल्मों में इसके पीछे का तर्क भी है और अंत में हीरो का बुरा हश्र भी। लेकिन एनिमल अपने नायक का कोई बचाव नहीं करती। वह कहती है कि हीरो ऐसा है तो है। हीरो की करतूतों पर हॉल में बैठी ऑडियंस की सीटियां डायरेक्टर की इस बात पर मोहर भी लगा देती हैं।

सवाल यह है कि फिल्म के नायक जैसा इंसान हमारे आसपास होगा, तब भी क्या हम उसे इतना ही पसंद करेंगे? क्या रियल लाइफ में ऐसे किरदार को हम सुधारगृह में या सलाखों के पीछे नहीं देखना चाहेंगे? फिल्म को लेकर सबकी अपनी सोच और तर्क हो सकते हैं, लेकिन बड़ा सवाल यह उठता है कि पर्दे पर इतनी हिंसा और खूनखराबा दिखाकर आखिर क्या संदेश देने की कोशिश हो रही है। जाहिर है कि अब इस तरह की फिल्मों की बाढ़ आ जाएगी। बॉलिवुड भेड़चाल में जो यकीन रखता है। अगले साल फिल्मों में इससे ज्यादा हिंसा देखने को मिल सकती है। इस साल की सारी हिट फिल्में हिंसा और एक्शन से ही भरपूर रही हैं, चाहे जवान, टाइगर, गदर या पठान हों या साउथ की जेलर और लियो। इन सारी फिल्मों के सुपरहिट होने को पूरे समाज की पसंद बताकर आगे भी ऐसी ही फिल्में थोंपना हर तरह का सिनेमा पसंद करने वाले दर्शकों के साथ कितना बड़ा अन्याय होगा।

नैशनल क्राइम रेकॉर्ड ब्यूरो के हाल में जारी अपराध के आंकड़ों को देखें तो पता चलता है कि हमारे आसपास हिंसक वारदात कितनी तेजी से बढ़ती जा रही हैं। क्या सिनेमा में भी हम वही सब देखना चाहते हैं जो हर रोज अखबारों या न्यूज चैनलों में देख रहे हैं? किसी गली में कोई सिरफिरा सरेआम एक मासूम लड़की का सिर कुचलकर नृशंस हत्या कर रहा है तो कहीं एक नाबालिग बीच सड़क दूसरे नाबालिग का गला रेतकर नाच रहा है। इन लोगों के अंदर ये जानवर कहां से आया। ये सब कहीं न कहीं सिनेमा और वेब सीरीज से इंस्पायर तो हो ही रहे होंगे।

ओटीटी पर जब खुलेआम सेक्स और हिंसा परोसा जाना आम हुआ तो फिल्मों को भी मानो हिंसक दृश्यों की अति दिखाने की छूट मिल गई। मिर्जापुर से इसकी शुरुआत हुई तो अब हर ओटीटी प्लैटफॉर्म अपने यहां इसके जैसी या इससे भी हिंसक एक वेबसीरीज रखना सफलता की गारंटी मानने लगा है। हाल ही में फिल्म एक्टर शबाना आजमी ने कहा भी कि ओटीटी भी फिल्मों की तरह हो गए हैं। जैसे एक

फिल्म हिट होने पर उसी थीम पर फिल्मों की लाइन लग जाती है, वैसे ही ओटीटी पर भी एक जैसी सीरीज आने लगी हैं– वल्गर और हिंसक। एक्टर ऋचा चड्ढा ने भी कहा कि मेरे लिए मिर्जापुर बहुत हिंसक है। फिल्म लाइन के अंदर से ही ऐसी आवाजें उठनी जरूरी हैं, वरना हिंसा दिखाने का यह ट्रेंड खतरनाक रूप लेता जाएगा।

शकों का मूलनिवास और वंश-विस्तार?

– धर्मचन्द्र विद्यालंकार

भारतीय इतिहास की यही मूलभूत समस्या वर्तमान में भी अनसुलझी हुई है कि आखिर शक–सीथियन लोग कौन थे और वे भारतवर्ष में कहाँ से चलकर आये थे। तथा, आजकल वे किन भारतीय जाति–वर्गों में अर्न्तसमाहित भी हो गये हैं। या फिर उनसे किन–किन जातियों और वंशों का उद्भव और विकास हुआ है। इस विषय में सर्वप्रथम तो सीथिया को लेकर ही बहुत विवाद है। क्योंकि उसकी जो भी अब भौगोलिक स्थिति है, वह दो–तीन स्थानों पर ही मान्य है।

यथा, इतिहास के पितामह हैरोडोड्स जोकि पाँचवी और छटी शताब्दी ईसा पूर्व के इतिहास विद्या–विशारद व्यक्ति थे, वे दक्षिणी रूस या वर्तमान के क्रीमिया और यूक्रेन जैसे कालासागर के तटवर्ती भूभाग को ही सिथिया मानते हैं और वहीं से 'शक–सीथियन' जातियों का उत्प्रवास। वे कालासागर पारीय क्षेत्रों में जर्मन और ग्रीस तक भी मानते हैं। वे उनकी ही एक शाखा को मस्सागेटा या महान् जाट जैसा कुलनाम भी देते ही हैं। तो पश्चिमी जगत् अथवा यूरोपीय महाद्वीप में तो उनका आगमन उधर से ही बाल्कन प्राय द्वीप अथवा आस्ट्रिया और हंगरी–बुल्गारिया (थ्रेस) तक भी संभव है। परन्तु बाद में यूरोप में उत्तर से आने वाली स्कैण्डनेवीयन जूटस और गोथ (जर्मन) तथा गलाती या गाल (फ्रैंक) जैसे वंशों ने उनको वहाँ पर अपने ही अधीनस्थ बना लिया था। तभी वे ग्रीक (ग्रीस) और मिस्र की ओर हरकर चले गये थे। या फिर मध्यपूर्व में लेबनान जॉर्डन में जा बसे थे।

क. सिथिया सम्बन्धी विवाद क्या है

दूसरी मान्यता सीथिया की जो है, वह कश्यप सागर के पूर्व में ही स्थित है। कर्नल टॉड जैसे राजस्थानी इतिहासज्ञ ने ईसा पूर्व दो तीन हजार वर्ष पूर्व में लगभग यहीं से सभी भारतीय उपमहाद्वीप की जो योद्धा जातियाँ हैं, उनका उद्भव और आव्रजन भी माना है। वहीं की 'कुरुगन–सभ्यता' कभी उनकी रही थी। अतः वर्तमानकालीन अधिकाँश इतिहासकार भी स्टैपी के या घास के उन्हीं मैदानों से शकायों की उत्पत्ति और वहीं से उत्प्रवास मानते हैं। परन्तु वे इस स्टैपी या सीथिया का विस्तार व्यापक रूप से मध्येशिया के कजाकिस्तान तक भी मानते हैं। वहीं पर अल्टाई पर्वतमाला भी स्थित है। उसके पश्चिमोत्तर में यदि रूसी साईबेरिया है तो उसके पूर्वोत्तर में ही चीनी त्यानशान की पर्वतमाला (मंजूवान) है। वहीं पर अफगानिस्तान की गामीर पर्वत–श्रृंखला है तो वहीं पर ईरान का खुरासान अथवा पुरातन गुटीयम् अथवा गौडीयम् पूर्वी प्रान्त भी स्थित है। जहाँ पर कि आमू–दरिया की जलधाराएँ भी सदा प्रवाहित रहती हैं। वहीं पर भी के.सी. दहिया जैसे लोग आज से आठ–दस हजार वर्ष पूर्व पहले कृषि व्यवस्था का विकास भी पाते है। ईरान का जाग्रोस पर्वत–शिखर भी वहीं पर स्थित है, जहाँ पर कि अन्न–संग्राहक अवस्था में लेबान्ट आदिमानव आकर बसा था। और वही के शैल–शिखरों से निर्झरित जल–धाराओं में अनायास उगे हुए गेहूँ के दानों से उसने आगे अन्नोत्पादन करना आरम्भ कर दिया था।

ख. कजाकिस्तान ही पुरातन शकस्थान है

अधिकाँश इतिहासवेत्ता इसी वक्षुनदी घाटी स्थित सभ्यता को नाम जेटू ही कहकर बुलाते हैं। और इसी की अग्रिम श्रृंखला में पाँच–छः हजार वर्ष पहले सिन्धु घाटी की सभ्यता को भी देखते हैं। जोकि बेबीलोन और मिस्र की नीलनदी की सभ्यता की ही उत्तराधिकारिणी भी थी। अतएव मध्येशिया में स्थित कजाकिस्तान ही हमें पुरातन शकस्तान प्रतीत होता है। चाहे ये शकार्य सीथियन लोग कभी ईरान से ही उजड़कर उधर क्यों न गये हों। जैसाकि स्पष्ट संकेत डॉ० सत्यकेतु विद्यालंकार ने अपनी पुस्तक 'प्राचीन–भारत' में किया है। उनके मत से ईसा पूर्व 1650 ई० में जब स्टैपी से आकर रूसी कसाइटों अथवा क्षत्रियों (खत्रियों) ने दक्षिणी रूस पर अचानक आक्रमण किया था, तभी ये जूती या यूची या जेटी लोग पूर्वोत्तर में जाकर चीनी तुर्किस्तान की त्यानश्यान पर्वतमाला की उर्वर उपन्यका में जाकर अधिवास करने लगे थे। यही लोग वहाँ के कान्सू प्रदेश में बसने के ही कारण ईसा पूर्व की आरंभिक शताब्दियों में कुषाण या यूची भी कहलाये थे। अतएव आजकल अधिकाँश पुरात्तत्ववेत्ता विद्वान भी कजाकिस्तान को ही शकायों का मूलनिवास मानते हैं। जबकि कर्नल टॉड सीथिया का विस्तार सिंधु के डेल्टा तक भी देखते हैं।

ग. भारतीय शिवस्तान कहाँ था?

विशेषकर जो भारतीय परम्परावादी इतिहासकार है, उनको सीथिया अथवा शिवस्तान किंवा सीस्तान की यही भौगोलिक अवस्थिति सहजतया स्वीकार है जोकि ईरानी सीस्तान से लेकर भारतीय (अखण्ड) बिलोचिस्तान तक भी विस्तृत है। अतएव वहीं से शकमूल की जो जातियों और वंश है, उनकी उत्पत्ति मानने में भला उन्हें भी क्या आपत्ति आज हो सकती है। कारण कि हमारे परम्परा प्रवीण पुरोधा पुरावृत्तवेता विद्वान् ईरान और अफगानिस्तान को सप्तसिंधु या फिर अखण्ड आर्यावर्त का ही तो व्यापक विस्तार अतीत काल में मानते रहे हैं।

यदि दुर्जन–तोष–न्याय के आधार पर हम उनके इस मत को ही कालक्रम से मान भी लें तो ईसा पूर्व दूसरी–तीसरी शताब्दियों में ही ये शक या कज्जाक लोग चीन के हुगनुओं या हूणों द्वारा विस्थापित होकर इधर बैक्ट्रिया अथवा उत्तरी अफगानिस्तान के मार्ग से ही सिंधु–सभ्यता के बोलन दरें से ही अविभाजित भारतवर्ष में प्रविष्ट हुए थे। जोकि सिन्ध–प्रदेश में ही अवस्थित है। वहीं पर भारत–वर्ष का भी प्राचीन शिवस्तान या सीस्तान स्थित है तो उसी के उत्तर में ईरान का भी सीस्तान स्थित हैं। भारतीय मंसूरा (ब्राह्मणावाद) और मुल्तान से लेकर मकरान (ईरान) तक वही विस्तृत है। (घ) शक–वंश वृक्ष की शाखा प्रशाखाएँ।

अब हम लोग यहाँ पर शकों की जो अलग–अलग शाखाएँ या फिर वंश थे उन पर भी चिन्तन करते हैं। सिन्धु नदी घाटी के बोलन दरें से चलकर शकों की एक शाखा उत्तर पूर्व में तक्षशिला की ओर ही चली गई थी। संभवतः यही मूल शकायों की शाखा भी थी, कारण, क्योंकि इसी का नाम कर्नल टॉड़ ने शकमूल की जट्टी–तक्षक शाखा के ही रूप में पहचाना था। जोकि कालान्तर में तक्षक नाग वंशज शाखा भी कहलाई थी। तो शकों की दूसरी शाखा भारतवर्ष के अन्दर मथुरा तक चली आई थी। जिसके क्षत्रप का नाम हमें रज्जुल और हगमास मिलता है। यदि रज्जुल के ही वंशज वर्तमान काल में आगरा और धौलपुर के राजौरिया जाट हो तो वैसा असंभव कहाँ है।

परन्तु हाथरस में जो शक क्षत्रप या हगमास उसी के वंशधर वर्तमान में हमें सादाबाद तहसील के 84 गांवों के हगा–चौधरी लगते हैं जोकि स्वयं को आजकल अग्र चौधरी भी कहलाने लगे हैं। ठाकुर देसराज ने इनका मूलाधिवास चीन के तंगण और और परतगण नदी तटबन्धों को ही तो स्वीकार कभी किया था। इन्हीं नहपान वंशज शकों की एक शाखा पश्चिमी भारत में विदिशा और उज्जैन तक भी शासक बन गई थी। जिसका अन्तिम शासक रूद्रसिंह प्रथम था, उसी के नाम पर महाकाल रुद्र की पूज्य–उपासना आज भी उज्जैन में की जाती है।

ङ. पश्चिम–दक्षिणी भारत में शक (शासक)

उज्जैन में विक्रमादितय शंशाक (शकारि) से पूर्णतया पराजित होकर ही यह क्षयरात वंशीय शकों की शाखा और भी पीछे गुजरात के जूनागढ़ से की ओर निकल गई थी और रुद्रदामन् जैसा परमप्रतामी शासक संभवतः इसी वंश–वृक्ष का प्रसिद्ध व्यक्ति था। जिसने कि चन्द्रगुप्त मौर्य के साले पुष्पगुप्त द्वारा निर्मित सुदर्शन सरोवर का जीर्णोद्धार भी कराया था और वहीं पर उसने अपना अभिलेख भी उत्कीर्ण कराया था जोकि संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण प्रथम शिलालेख ही है। उसके बाद समुद्रगुप्त का प्रयाग–प्रशस्ति लेख संस्कृत भाषा में है। अतएव शकार्यों ने ही कालानतर में संस्कृत भाषा को भी अपना लिया हो सकता था। यदि यवन–आक्रमण में पंजाब से उजड़कर आये हुए कठ कबीले ने इस पुण्य प्रदेश को अपना नाम 'काठियावाड़' दिया था तो ईसा की बाद की शताब्दियों में आने वाले शक–शासकों ने ही उसको शकराष्ट्र से सौराष्ट्र तक भी बनाया होगा।

शकों की यही शर्यात् और क्षयरात (सूर्यवंशज) शाखा प्रमुखतम थी। उसी से संभवतः वर्तमान के जाटों के सहरावत और रावत तथा राव जैसे गोत्र निकले हो सकते हैं तो कायस्थों के भी सक्सेना और श्रीवास्तव जैसे कुलनामों में भी हमें क्षयरातों या शांतों की ही ध्वनि मिलती है। यही लोग बाद में ब्राह्मण–शासकों शुगों–कण्वों और गौतमी–शातकर्णी एवं वशिष्ठ–पुलमावी से संघर्षरत रहकर ही तो दक्षिणी भारत में नासिक और पैठण (औरंगाबाद) तक गये हैं।

च. राजपूत वंशों का उद्भव

नासिक ओर प्रतिष्ठानपुर जैसी जो शाखाएँ शकायों की थी, उन्हीं में से संभवतः पूर्व मध्यकाल (सातवीं से दसवीं–बारहवीं) शताब्दियों के समयान्तराल में ही राष्ट्रकूटों और पंवारों का भी तथा चालुक्यों का भी उद्भव हुआ हो सकता है, क्योंकि उस काल से पूर्व हमें उपर्युक्त वीर वंशों का कहीं कोई परिचय भारतीय इतिहास में मिलता भी कहाँ हैं। फिर समस्या यह भी यहाँ पर उठ खड़ी होती है कि यदि शकों का शासन–विस्तार सतत भाव से ही पश्चिमी और दक्षिणी भारत वर्ष में हो रहा था तो फिर वे कहाँ चले गए या विलुप्त हो गये। अतएव मध्यकाल और उत्तरमध्यकाल (चौदहवीं–पन्द्रहवीं सोलहवीं) शताब्दियों में जिन राष्ट्रकूटों और चालुक्यों तथा पंवारों का भी राज्य विस्तार हम दक्षिणी भारत से पश्चिमोत्तरी भारत तक देखते, वे वही हो सकते हैं। आबूपर्वत वाले गूर्जर वंशज राजपूत हूण–मूल के ही हैं।

प्रथम ईसा पूर्व शताब्दी में हम वर्तमान राजस्थान में भी उन्हीं शकों के उषावदात शासक का ही शासन पाते हैं। संभवतः जोकि नहपान या फिर चेस्टन जैसी शाखा का ही तो बरेण्य वीर पुरुष रहा होगा। मनुस्मृति और गीता में जो भी विदेशी रक्त–मिश्रण के प्रति जो चिन्ता व्यक्त की गई है, शायद वह शकों या खसों के प्रभुत्व का ही प्रभाव रहा हो सकता है जैसा कि मनु का कथन है–

शनकैस्तु क्रियालोपादि हमाः क्षत्रिया जातयाः वर्षलत्वं गतालोके ब्राह्मणामदर्शनात्। (मनु 39–40)

अतएव वहाँ पर खस (शक) और दरदों (ईरानियों) को विदेशी ही बताया गया है।

छ. जट्टी तक्षक नाग–वंश विस्तार?

तक्षशिला वाली शकों की ही शाखा जट्टी तक्षक (नागवंशज) भी कहलाती थी। इसी ने पंजाब या पातञ्जलि के वाहीक प्रदेश का नाम मद्र देश (महाभारत और पाणिनी) से बदलकर अपने ही कुलनाम पर ही तो शाकल नगरी या स्यालकोट किया था। जिनमें से ही वर्तमान में स्याल राजपूत और सहगल खत्री भी हैं। वरना वैदिक या उपनिषद् काल में इस देश का नाम बजाय स्यालकोट (किले) के मद्र–देश ही था और उसके शासक का ही नाम अश्वपति कैकेय था, जिसकी सती–साध्वी सुकन्या सावित्री थी। जोकि सीस्तान या ब्लोचिस्तान के साल्वकों किवां हाला जर्तगणों में ही तो विवाहित थी। 'साल्वका हाल्वका इति' पाणिनी का एक सूत्र भी है। इसी प्रकार से 'मद्रका भद्रका इति' सूत्र भी है जोकि वर्तमानकाल में भटनेर या हनुमानगढ और गंगानगर (कुरु–जांगल प्रदेश) के जाटों में आज भादू ही कहे जाते हैं, तो वही लोग ब्राह्मणों में भी राजस्थान में भदानी कहलाते हैं तो इसी प्रकार से भादानक प्रदेश बैर–ब्याना और भरतपुर–रेवाडी के गूर्जर लोग भी वर्तमान में भदाना से बिगडकर भडाना ही कहे जाते हैं। तक्षक (नागवंशी) शाखा के ही लोग हमें वर्तमान काल में यदि तक्षक या टोकस जाटों में मिलते हैं तो छीपी या रोहिल्ला जैसी एक शिल्पी (छिपी) जाति में वे बहुलता के साथ देखे जा सकते हैं। इसी प्रकार से रुहेलखंड (बरेली–आँवला) के मुस्लिम–राजपूतों या बंगश पठानों की रगों में भी वही शकवंशी रक्त प्रवाहित है। उसी प्रकार से टाँक (राजस्थान) की रियासत के संस्थापक भी तक्षक अथवा टाँक वंशी जाट मुसलमान ही थे। हमें रावत कहलाने वाले राजपूत और जाट एवं ब्राह्मण भी क्षयरात वंशज शकों की ही शाखा प्रतीत होते हैं। रावत ही से बिगडकर रावल जैसी उपाधि बनी होगी। तभी रावलपिंडी जैसा नगर नाम तक्षशिला के ही पास रावल नगर या पुरी–ब्राह्मणों द्वारा बसाया हुआ था।

गुजरात के इतिहास–लेखक माणिक्य मुंशी (के.एम.) ने भी तो शकमूल के पौराणिक अर्थात् किवां ऐतिहासिक क्षयरात वंश द्वारा ही आनर्त या लाट प्रदेश को (दक्षिणी गुजरात) से पृथक काठियावाड को सौराष्ट्र बनाने की बात कही है। बल्कि वे तो पन्द्रहवीं और सोलहवीं शताब्दियों तक वहाँ पर एकक्षत्र शासन करने वाले उन चालुक्यों को ही गूर्जर–नरेश मानते हैं, जोकि वहाँ पर जयसिंह–सिद्धार्थ के साथ दसवीं–ग्यारवी शताब्दी में ही आये थे। बरना उससे पूर्व जूनागढ़ में खंगार वंशज आभीर नरेश का ही शासन थाय जिसकी पत्नी सोरठ सर्वांग सुन्दरी भी थी। उसी के बच्चों को तो जयसिंह चालुक्य ने जूनागढ़ (पुरातन दुर्ग) में शिला पर ही पटक–पटकर कर मारा था। वरना राजपूतों (चालुक्यों सोलकियों) से पूर्व अनूप या असीरगढ (खण्ड़वा म०प्र०) से लेकर जूनागढ़ तक ईश्वर सेन जैसे आभीर वंशी शासकों का ही शासन पूर्वमध्यकाल में था। राजपूतों की उत्पत्ति और उद्भव परवर्ती काल में ही जाकर हुआ है।

इसी प्रकार से बल्लभी–खम्भाल (भावनगर–अमरेली) की खाडी में पहले कभी गोहिल्लों का ही राज्य था जोकि वर्तमान में पालिताना में बसते हैं। वहीं पर बाद में मैत्रक वंशी का बल्लभी–खंभात में शासन स्थापित हो गया था। सम्राट् हर्षवर्धन के समय पर ध्रुवभट्टसेन ही वहाँ का वीर व्यक्ति शासक था। उसने सम्राट हर्ष के साथ रक्तिम संघर्ष भी किया था, जब वह उसमें पराजित हो गया था, तभी वह उनसे सन्धि करके उनका ही जामाता बन गया था। 'सर्वखाप पंचायत' का संस्थापक वहीं भर्दाक था, उसी के वंशज शिवस्तान या मेवाड (मद्र से मेव) ने बाद में चित्तौड में आकर स्थापित किया था। वै मैत्रक (सूर्यवंशज) लोग भी ईरानी शकवंशी ही माने जाते हैं। उन्हीं में राणा संग्राम सिंह और कुम्भा और प्रतापसिंह जैसे शूरवीर जन्में थे। सौरम और सिसौली के बाल्याण (बल्लभान् संस्त) वंशी जाट लोग भी बारहवीं तेरहवीं शताब्दियों से मेवाड से ही उजड़कर गंगा–यमुना के उर्वर अर्न्तवेद में आकर बस गये थे। अतएव कर्नल टॉड और प्रो० विगलें ने जो जट्टी तक्षक जाति को ही वीर वंशों की मूल माता माना है, वह सर्वथा उचित ही है। उसी की एक शाखा अफगानिस्तान में युसुफजई भी कहलाती है जोकि जाट और गूजर दोनों ही तो समझे जा सकते है। पाकिस्तान में भी एक जाटों में एक गूजर गोत्र मौजूद हैं। वहाँ के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की बेगम बुशरा खान की सखी सहेली फरहा खान गूजर गोत्र की मुस्लिम जाट ही हैं।

आपके परिवार की इतिहास पुस्तिका कहां है ?

– सूरजभान दहिया

14 अगस्त 2022 को गुड़गांव के एक स्कूल के आजादी के अमृत महोत्सव समारोह में शामिल होने के अपने अनुभव को आपसे सांझा करते हुये मैं कुछ बदलते परिवेश के विषय में कहना चाहूंगा। विज्ञान प्रदर्शनी देखने के बाद मैंने 12वीं कक्षा के कुछ छात्रों से बात की। बातों–बातों में मैंने एक छात्र से मुगल बादशाह औरंगजेब के पिता का नाम पूछा। उसने झटसे कहा– ''शाहजहां'' और शाहजहां के पिता का नाम? उत्तर मिला– ''जहांगीर''। फिर मैंने जहांगीर के पिता का नाम जाना। ''अकबर, सर'' और अकबर के पिता? ''हुमांयू सर'' तपाक से छात्र बोला। और हुमांयू के पिता कौन? छात्र का जवाब ''बाबर''। मैंने छात्र की पीठ थपथपायी और धन्यवाद भी उसे बोला। फिर मैंने उसके पिता का नाम जानना चाहा। उसने बता दिया। फिर मैंने उसके दादा का नाम पूछा– ठीक उत्तर दे दिया। आगे मैंने उसके परदादा का नाम पूछा– ''नहीं मालूम, सर। थोड़ी सी मायूसी आवाज से बोला? ''अरे बेटे! तुम ने औरंगजेब से लेकर बाबार तक सारे मुगल खानदान का ज्ञान है, पर अपने परिवार के बारे में दादा तक ही जानते हो? मैंने कहा! मैंने अपनी बात जारी रखते हुये उस छात्र से पूछा– ''तुमने ताजमहल देखा है?'' हां, सर, उत्तर मिला और उसे ताजमहल के बारे में सबकुछ पता था। फिर मैंने उससे उनके दादा उनके जन्मस्थान, उनके जन्मदिवस व उनकी दादी के बारे में पूछा। छात्र का उत्तर था– मुझे ज्यादा पता नही, वे गांव में रहते हैं? जो हकीकत मैंने बयान की, वह लगभग सभी छात्रों के संबंध में एक जैसी है। जिसको अपने परिवार का इतिहास ही नहीं पता, उसका जीवन पशु समान है।

आगे मेरी जिज्ञासा थी कि छात्र स्वतंत्रता अभियान के विषय में कितना जानते थे? मैंने सभी छात्रों से पूछा– बच्चो! यह बताओ कि हममें स्वतंत्रता पाने की भावना कब जागी? अंग्रेजों से तो हमारे राजे–महाराजे–बादशाह युद्ध लड़ते रहे। छात्र मौन थे, एक छात्र ने चुप्पी तोड़ी और कहा– सर! हमें हिस्ट्री में ऐसा टोपिक नहीं पढ़ाया जाता, आप इसके बारे में बताइये? फिर इस संबंध में मैंने छात्रों से अपनी जानकारी सांझा की।

''अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी ने दक्षिण भारत से व्यापार करने हेतु भारत में प्रवेश किया। धीरे–धीरे कमजोर दक्षिण भारत के रजवाड़ों को उन्हें जानकारी पाकर सत्ता की लालसा कंपनी ने पा ली। फिर 1757 की प्लासी की लड़ाई जीतकर भारत के दक्षिण भाग पर ईस्ट इंडिया कंपनी ने सत्ता हथिया ली। अंग्रेज मद्रास से चलकर फिर सारे दक्षिण–पूर्वी भारत को रोंदते हुये दिल्ली आ पहुंचे। सभी राजे या बादशाह अपने राज को बचाने हेतु अंग्रेजों से लड़े और उनकी अधिनता स्वीकार कर ली। वहां उन्होंने जनता पर भारी भरकम लगान लगाकर खूब शोषण किया। 1803 में दिल्ली को भी अंग्रेजों ने अपने कब्जे में ले लिया और दक्षिण–पूर्वी भारत की लगान प्रक्रिया यहां पर भी लागू कर दी। यहां का किसान अड़ गया। लगान अंग्रेजों को नहीं देंगे। अंग्रेजों ने अपनी दमन नीति को यहां भी दोहराने की कोशिश की, किसानों का आंदोलन का सिलसिला शुरू हो गया। यहां किसानों में एक इच्छा शक्ति उभरी और उनके अंतःकरण से एक नव प्रेरणा उदय हुई– ''अंग्रेजों को भगाओ, आजादी पाओ।'' उन्होंने अपनी नियति का स्वयं निर्धारण करने का दृढ़ संकल्प लिया और इस प्रकार किसानों व उनके सैनिक पुत्रों ने स्वतंत्रता संग्राम 1857 का बिगुल बजा दिया। 200 साल की गुलामी ने भारत के लोगों को इतना निर्बल और असहाय बना दिया था कि 'आजादी' जैसे सुंदर भाव उनके दिल और दिमाग से बिल्कुल गायब हो गये थे। आप इस काल की हिस्ट्री के एक–एक पन्ने को खंगालिये, आपको आजादी पाने का कही भी जिक्र नहीं मिलेगा। आजादी की आवाज दिल्ली के आसपास के लोगों का जनभावना थी। अतः हमें जन इतिहास का ज्ञान होना जरूरी है– History is the people'' इसी किसानों को उद्घोष से बाल गंगाधर तिलक ने 19वीं सदी के अंत में कहा था– Freedom is my fundamental right and I shall have it. इसके पश्चात् देश में स्वतंत्रता आंदोलन का श्रीगणेश हुआ और यह 90 वर्ष चला और हम 1947 में आजाद हुये।

मैंने पाया कि छात्रों को असली इतिहास को जानने की प्रबल इच्छा है, परंतु स्कूल पाठ्यक्रम में जन इतिहास नहीं पढ़ाया जाता है। उन्हें पता ही नहीं हमारे स्वतंत्रता सेनानी कौन हैं?

हमारे स्वतंत्रता सेनानियों की संख्या लाखों में है। 1857 से लेकर 1947 तक देश की आजादी के लिये असंख्य देशभक्तों ने अपने प्राणों की आहुतियां दी। परंतु आजादी के पश्चात जो स्वतंत्रता सेनानियों की सूची तैयार की वह बहुत सीमित कर दी। प्रसिद्ध लेखक जमाईका किनकेड का कहना है– इतिहास के साथ हमें सही संबंध बनाये रखना होगा कि भूत ने ही वर्तमान को परिभाषित किया है। अंग्रेजो को यह स्वीकार करना चाहिये कि वे अब भी Colonialism से लाभांवित हो रहे हैं। प्रियमवदा गोपाल कैंब्रीज में

Postcolonial Studies की प्रोफेसर हैं, उनका कहना है कि स्वतंत्रता आंदोलन में कुछ परिवार अंग्रेजों के सहयोगी बनकर करोड़पति हो गये जो आज अघोषित Monarch बन गये हैं तथा अन्य जो स्वतंत्रता सेनानियों की लिस्ट में आ गये वे राजनीति के बादशाह हो गये हैं– वे स्वतंत्रता सेनानी परिवारों के सदस्य होकर भारत के सर्वेसर्वा हो गये हैं। उनका कहना है कि भारत में रागदरबारी इतिहास कुछ लोगों के लिये लिखा गया है, इसमें जनइतिहास का बहुत बड़ा भाग गायब कर दिया गया है।

उपरोक्त संदर्भ में मैंने स्कूल छात्रों से गुड़गांव के सेक्टर–31, झांडसा गांव का जिक्र किया। यहां के 1857 स्वतंत्रता संग्राम के दो सेनानियों–गालम सिंह एवं बख्तावर सिंह ने अपने प्राणों की आहुतियां दीं, परंतु इनके शहीद परिवारों की पहचान तक नहीं। ऐसे लाखों भारत में Unnoticed, unwept, unsung freedom fighters हैं। विदेशों में विश्व के दो महायुद्धों में भारतीय सैनिकों जिन्होंने वहां लड़ते–लड़ते अपने प्राणों की आहुतियां दी के War Heroes Memorial हैं। वहां के लोग प्रातः अपने काम पर जाने से पहले कृतज्ञता स्वरूप उन भारतीयों के स्मृति स्थल पर जाते हैं तथा उन्हें नमन करते हैं। भारत में तो ऐसी सुखद परंपरा है ही नहीं। भारत में तो ऐसी सुखद परंपरा है ही नहीं। भारत में नई दिल्ली में अब War Memorial बन गया है। परंतु मैं उन Unknown, Wnwept तथा Unsung स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति अपनी संवेदना प्रकट कर रहा हूं, जो Historyless हैं। हमें ऐसे स्वतंत्रता सेनानियों का भी स्मृति स्थल निर्मित करना चाहिये और राष्ट्र को उनके प्रति कृतज्ञ होना चाहिये।

अब मैं ताजमहल के प्रसंग को पुनः उठा रहा हूं। ताजमहल अपने परिवार को जीवित रखने तथा उसके प्रति श्रद्धा रखने का प्रतीक है। हमें भी अपने परिवार को सदैव जीवित रखने हेतु अपने परिवार के इतिहास का लेखन करना चाहिये। पहले यह परंपरा परिवारों के खानदानी ब्राह्मण लोग निभाते थे जो अब लुप्त सी हो गई है। इसीलिये यह दायित्व हमें स्वयं निभाना चाहिये। परिवार इतिहास पुस्तिका हमारी Family Heritage के रूप में सुरक्षित रखकर अगली पीढ़ी के लिये अमानत के तौर पर सुपुर्द करने की सुखद परंपरा विकसित करनी चाहिये। इसमें परिवार सदस्यों के फोटो, जन्मदिवस एवं अन्य महत्वपूर्ण Events का उल्लेख होना चाहिये। आप अपने पूर्वजों के जन्मस्थल अर्थात गांव को न भूलें एवं अपनी भाषा, भोजन वेशभूषा से जुड़े रहें। यदि आप इनको भूल गये तो यह निश्चित है कि आप अपनी पहचान को खो देंगे।

Remembering the Iron Man of India

- R.N. Malik

The 123rd Birth Anniversary of Sardar Patel, the Iron Man of India, falls on 31st October. Naturally, this day reminds us to revisit the life and deeds of this great leader whom India owes so much. Persons like the great Sardar are born once in centuries. After his death in December 1950, the country has not seen a great leader like him again. He passed his Bar Examination in England in 1912 by standing first and became the Barrister. He returned to India very soon and restarted his practice at Ahmedabad. He used to laugh whenever his colleagues talked of Gandhi Ji becoming a rising star to lead the nation to achieve Swaraj But success of Champaran Satyagraha undertaken by Gandhi Ji in 1917 transformed his life overnight. He met Gandhi Ji at Godhra in November 1917 and became his whole time disciple, left his roaring practice and started wearing Khadi dress made of yarn spun by his daughter.

Sardar Patel did the total ground work for all the four Movements led by Gandhi Ji. For example, the gathering of 70000 people at Bombay on 8th August 1942 at the time of launching Quit India Movemet was entirely his effort. Both Jawaharlal Nehru and Maulana Azad were hesitant to support the move but they fell in line once Gandhi Ji asked them to leave the party if they had ddoubtsabout the necessity of the Quit India Movement. A glimps of Sardar's galvanising speech on 26th July, 1942 at Ahmedabad is worth mentioning. He thundered," if all the leaders are arrested tomorrow, be prepared to die but do not fall back. This time, if a railway line is removed or an English man is murdered, the struggle will not be stopped....."

Sardar Patel was the only leader who led four individual nonviolent movements to resounding success. These were; Farmer's Movement in Kheda district of Gujrat in January1918, Nagpur Movement in March 1923, Borsad Movement in September 1923 and finally Bardoli Movement in March 1928. Bardoli Satyagraha continued for six months.and

farmers had started addressing Vallabhbhai Patel as Sardar. Thereafter, Vallabhbhai Patel became Sardar Patel and continues to be addressed as such till now.

The most defining moment for the great Sardar came in June 1947. Lord Mountbatten created the State Department under the wings of his Home Ministry as Mountbatten knew very well that only the great Sardar could dominate and bring the unwilling princes to submission to join the Indian union. Mountbatten was very keen to annex all the 555 States(10 were in Pakistan) with Indian Union for two reasons. Firstly, he did not want to leave behind India in a mesh and secondly, he was appalled by the way princes were wasting state resources profligately when their subjects were facing grinding poverty. He realised that merging of States with democratic India would bring democratic and economic freedom to one third population of India. Sardar Patel prevailed upon Nehru and Gandhi Ji to let Mountbatten to continue as Governor-General after 15th August till the process of annexation of States was more or less complete. Mountbatten, in return, promised Sardar Patel to offer him a Basket of Apples (princely States) before he left for England. He deputed his highly competent Reform Commissioner V.P. Menon (1893-1965) as the Secretary of the State Department.

V.P. Menon drafted the document, called the Instrument of Accession, for annexation of States into India. Jinnha had declared that he wanted to creat boils in the body politics of India and consequently was busy in cajoling some of the princes to declare independence and assured them international recognition. Legally they could do so. But Sardar Patel foild his ignoble designs by taking premptive measures.

The Instrument of Accession assured the princes that Government would have control over States only in respect of three subjects I.e External Affair, Defence and Communications otherwise they would enjoy full internal autonomy in running their States.

Thereafter, Sardar Patel and Mountbatten adopted a carrot and dagger strategy to deal with the princes; carrots (Privy purses, honorifics, Ambassadorships) for those who agree for annexation noiselessly and dagger for the recalcitrants. The common threat issued was that their subjects were fed up with their hedonistic lifestyles and desperately yearned for democratic set up and could revolt against them any time and put their safety and future in jeopardy and Indian government would not come to their rescue in that situation.

Mountbatten called and chaired the Conference of Chamber of Princes on 25th July.1947. Beside him strode the senatorium figure of Sardar Patel. Then, Mountbatten delivered a historical speech that bordered on a brazen threat to the princes. He told them that British suzernity would be over after 15th August and thereafter they would have to negotiate with (pointing his finger towards the great Sardar) this man. The document of annexation prepared by Menon would not be repeated. The princes were stunned at this speech and most of them realised that their was no better alternative than to join the. Indian Union. To accelerate his efforts further, Mountbatten held a reception dinner for the princes on 28th July at which he, Sardar Patel and V.P. Menon joined hands to bully the unwilling and recalcitrant princes of bigger States like Bhopal on that occasion. This way, all the recalcitrant princes had been brought into submission except that of Hyderabad when Mountbatten left India on 21st June 1948. Hydrabad was annexed on 21st September 1948 after resorting to the military operation.led by Major General J.N.Chaudhari who became C-in-C in 1962.

70 percent States were having a geographical area less than 50 Sq. miles each and bulk of them had less than 20 sq.miles each.. V.P. Menon decided to amalgamat these geographically contigous tiny States into Unions after getting their signatures on the dotted lines of the Instrument of Accession .

This way, Annexation of rest of the States was singularly managed by intrepid V.P. Menon. He coaxed, cajoled and threatened the rulers to bring them on the line and join the new India. Gujrat had 200 tiny States that were grouped into Kathiawad Union on 16th February 1948. Finally, small States of Rajputana were unified into Rajsathan Union and this unification was inaugurated by Sardar Patel on 30th

March 1949 at Jaipur. This is how all the 555 States were annexed and India became Akhand Bharat for the first time in the history and the two stalwarts had a sound sleep for the first time on that night.

Sardar Patel could not lead a happy and contented life even after August 1947. Factors responsible were monumental problem of rehabilitation of refugees, maintaining communal harmony, attending large number of meetings, attending Constituent Assembly sessions, jittery behaviour of Jawaharlal Nehru and martyrdom of Gandhi Ji. Process of unification of States did not give him much trouble as bulk of work was handled by V.P.Menon. The great Sardar had his first massive heart attack on 5th March 1948 and he told Devdass (son of Gandhi Ji) that heavy work pressure and grief of Bapu's death bottled up his heart. Annexation of Tibet by China and Nehru not doing anything further filled his heart with grief. Consequently, Sardar's condition deteriorated further in December 1950 due to weakening of his ailing heart further. He was shifted to Birla House in the warmer climate of Bombay on 12th December on the advice of his doctors. But this change brought no relief and the end came on 15th December in the morning. Lacs of people joined the funeral procession. Nehru, Azad and Dr. Rajendra Prassad were also present at the funeral. Dr. Rajendra Prassad wept inconsolably. Paying tribute, he said," Sardar's body is being consumed by fire. But no fire can consume his fame. Light is out of our lives again on this fateful day....." Sardar left behind nothing except his pairs of Khadi clothes and a robust legacy.

It is sad to see the building of Sardar Patel Samarak Bhawan at 7 Jantar Mantar Delhi in poor condition and virtually converted into the office of JDU party of Bihar C.M Nitish Kumar.

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl (DOB 11.02.98) 25/5'5" M.A. English from Punjab University, Steno English and computer diploma from Hatron. Doing private job in Chandigarh. Father retired Superintendent from Health department Haryana. Mother housewife. Family settled at Zirakpur (Punjab). Preferred match in Tri-city. Avoid Gotras: Dahiya, Balyan, Jatrana. Cont.: 6239058052
- SM4 Jat Girl (DOB 25.10.92) 31/5'5" B.Tech. in Electrical & Communications. Employed as Contract Engineer in BEL Company for six years. Father retired from HMT. Family settled at Pinjore (Haryana). Preferred match in government/private sector. Avoid Gotras: Dhayal, Punia, Phaugat. Cont.: 9416270513
- SM4 Jat Girl (DOB 03. 05. 93) 30/5'2" MSc. In Optometry (Gold Medalist). Employed as Assistant Professor in MMU Solan with Rs. 5 lakh PA. Preparing for civil services and other competitive exams. Willing to open her own Clinic. Preferred match in government job or well settled in private sector. Avoid Gotras: Rathee, Ahlawat, Malik, Dahiya, Deswal. Cont.: 9992495183
- SM4 Jat Girl (DOB 07.09.94) 29/5'6" B.A., B.Ed., M.A. (History), NIT, CTET, PRT qualified. Father retired Superintendent from ULB Panchkula. Avoid Gotras: Bhakar, Sheoran, Dahiya. Cont.: 9463436817.
- SM4 Jat Girl (DOB August 95) 28/5'11" M.A. Economics & Math, B.Ed. Employed as JBT teacher in private school at Panchkula. Father Ex-serviceman. Mother housewife. Avoid Gotras: Dalal, Kadyan, Gowadia. Cont.: 9888754351, 8054064580
- SM4 Jat Girl (DOB 20.09.96) 27/5'5" B.Sc. (Hons.), MSc. (Hons.) in Geology (Earth Science). Working as hydro geologist. Younger brother pursuing MBBS. Father Assistant Director in DSE Panchkula, Haryana. Family settled at Batana (Punjab). Avoid Gotras: Dhattarwal, Ahlawat, Hooda. Cont.: 9814885021
- SM4 Jat Girl (DOB 07.01.92) 31/5'4" B.A. from Kurukshetra University. GNM from Pt. Bhagwat Dayal University Rohtak. Employed as Staff Nurse in Civil Hospital Sector 6 Panchkula on contract basis. Father retired Supervisor from HMT Pinjore (Haryana). Mother housewife. Own house at Pinjore Preferred match from Tri-city. Avoid Gotras: Bankura, Mann, Narwal. Cont.: 9354839881
- SM4 Jat Girl (DOB 11.07. 97) 26/5'5" B.Sc. Non-Medical from Kurukshetra University, M.Sc. Non-Medical from P. U. Chandigarh. Father Headmaster in Haryana Govt. Mother JBT teacher in Haryana Govt. Family settled at Panipat. Avoid Gotras: Deswal, Dahiya, Malik. Cont.: 7988993289, 9416173036
- SM4 Jat Girl (DOB 31.01.95) 28/5'1" B.Sc., M.Sc. (Botany). UGC, NET qualified. Ph.D in Botany from P. U. Chandigarh. Employed as Assistant Professor in College at Karnal on contract basis. Father retired from Defence. Mother housewife. Family settled at Ambala Cantt (Haryana). Avoid Gotras: Rathi, Kharb, Rana. Cont.: 9812238950
- SM4 Jat Girl (DOB 16.06.95) 28/5'2" Bachelor in Computer Science Engineering. Experience: 6 month internship in Yatra Pvt. Ltd. on line, 2 year as Software Engineer in Yatra Pvt. Ltd., on line. Earnings 11 lac P.A. Avoid Gotras: Kundu. Cont.: 9417869505.
- SM4 Jat Girl (DOB 10.02.96) 27/5'8" B.A., M.A. Economics. Self Employment (Home Tution). Father Superintendent in Forest Department Haryana. Mother housewife. Avoid Gotras: Kundu, Pahal, Lathar. Cont.: 9463226838, 8837546452
- SM4 Jat Girl (DOB 18.11.98) 24/5'4" B.Com., C.A. Package 24 lakh Annual. Father retired Superintendent. Mother housewife.

Own house in tricity. Avoid Gotras: Kadyan, Falswal, Dahiya. Cont.: 9888955626

- SM4 Jat Boy (DOB 21.11. 95) 28/6 feet. B.Sc. Computer Science, L.L.B. Now practicing in District Court and High Court Chandigarh. Father in Chandigarh Police. Avoid Gotras: Sandhu, Ledre. Cont.: 7888785519, 9041512610
- SM4 Jat Boy (DOB18.10.90) 33/6'1" B. Tech. Employed as CBI Officer in Port Blair and likely to be posted at Chandigarh. Father retired Under Secretary from Haryana government. Mother housewife. Family settled at Zirakpur. Preferred well qualified working match. Avoid Gotras: Khasa, Dahiya, Lathwal. Cont.: 7837551914
- SM4 (Physically Handicap) Jat Boy (DOB 31.03.87) 36/6feet. B. Tech. (Mechanical) from Maharaja Aggrasen Institute Delhi. MBA (Operation Management Correspondence) from MDU Rohtak. Working in MRD department in World Medical College, Jhajjar. Father retired from Transport department Haryana. Mother retired Lib Assistant from MDU. Avoid Gotras: Dahiya, Phaugat, Deswal. Cont.: 9996729404, 9953092079
- SM4 Jat Boy (DOB 30.09.94) 29/5'7" B.Sc. in Computer Science. Employed as Assistant in Central Government department at Chandigarh. Father retired Superintendent. Avoid Gotras: Phaugat, Duhan, Bamel. Cont.: 9463121441
- SM4 Jat Boy (DOB 1994) 29/6'3" Working in IT Company in New Jersey (USA). Pursuing PhD. In Computer Science. Father Lecture in Government school Delhi. Mother Class-I Officer in Delhi. Family settled at Delhi. Avoid Gotras: Dahiya, Sehrawat, Saroha. Cont.: 9315574231
- SM4 Jat Boy (DOB 15.02.89) 34/6'1" M.A. English from Punjab University. Employed as Ahlmad/Clerk in District Court Mohali on regular basis. Father retired Superintendent from ULB Panchkula. Avoid Gotras: Bhakar, Sheoran, Dahiya. Cont.: 9463436817
- SM4 Jat Boy (DOB 29.04.91) 32/5'7" PhD. Submitted in Structural Engineering. Father Assistant Professor in Jat College Rohtak. Mother Government School Principal. Preferred match M.Sc. in Chemistry/Bio./Math/physics with NET. Family settled at Rohtak. Avoid Gotras: Gill, Dahiya, Gehlawat. Cont.: 9416193949
- SM4 Jat Boy 29 year. Employed as Coach at Rohtak. Won Bronze medal in recent Para Asian Games China. Avoid Gotras: Hooda, Lakra. Cont.: 8607034318
- SM4 Jat Boy (DOB 05.06.96) 27/5'11". B. Tech. in Mechanical Engineering. Working as Assistant Manager in a reputed company at Noida with income 7.20 lakh PA. Agriculture land 1½ acre. Own house in Karnal. Father retired District Education Officer from Haryana Govt. Two married elder sisters. Avoid Gotras: Balyan, Mann. Cont.: 9466367107
- SM4 Jat Boy (DOB 28.09.92) 31/5'10". MBBS from Jhalawar Medical College PGI M.S. (Orthopedics) SMS Jaipur. Employed as M.O. Govt. Job. at Sri Dungergarh Bikaner (Rajasthan). Salary 1.10 LPM. Father retired SDO from Railway. Mother housewife. Eight acre agriculture land at village. Avoid Gotras: Punia, Mor, Roj. Cont.: 9350033583, 9416450228
- SM4 Jat Boy (DOB 09.09.97) 26/6 feet. B. Tech (Computer Science). MBA. Employed as Software Engineer in Rocket Software Pune with package Rs. 16 LPA (work from home). Father retired Supervisor from HMT Pinjore (Haryana). Mother housewife. Own house at Pinjore. Own coaching institute at Pinjore with income of Rs. 31 lakh PA. Avoid Gotras: Bankura, Mann, Narwal. Cont.: 9354839881
- SM4 Jat Boy (DOB 28.04.96) 27/184 CM. Captain in Army. Posted at Pune. Father in transport business. Mother housewife. Family settled at Zirakpur. Avoid Gotras: Dhull, Sheoran, Nehra. Cont.: 9878705529
- SM4 Jat Boy (DOB 25.01.97) 26/5'11" B. Tech. in Computer Science. Working as Lead Software Engineer in Statrys Ltd. at Bangkok, Thailand with Rs. 31 lakh package PA. Family settled at Pinjore. Avoid Gotras: Thenwa. Cont.: 8558024346
- SM4 Jat Boy (DOB 10.12.93) 29/ B. Tech. Employed in PGIMER Chandigarh in Fire & Security Department. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Sangwan, Jakhar, Sheoran. Cont.: 8901138020, 8882830601
- SM4 divorced Jat Boy (DOB 14.03.95) 28/5'10" M. A. English. Employed in Municipal Corporation Chandigarh as clerk on contract basis. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Sangwan, Jakhar, Pachahar. Cont.: 9463961502
- SM4 Jat Boy (DOB 12.07.96) 27/5'8" B. A., pursuing M.A. Employed as Stenographer (Govt. job) in Education Department. Avoid Gotras: Narwal, Kundu, Mann. Cont.: 9417869505
- SM4 Jat Boy (DOB 26.05.98) 25/5'8" MBBS. Working as J.R. in Safdar Jung Hospital Delhi. Father Sub-Inspector CRPF. Mother ANM. Avoid Gotras: Nehra, Gadhwal, Michuh. Cont.: 9015124456
- SM4 Jat Boy (DOB 20. 10. 92) 30/5'5" Graduate. Doing private job. Father retired from Government job. Mother in private job. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Lamba, Nandal, Ghalyan. Cont.: 7696771747
- SM4 Jat Boy (DOB 31.03.87) 30/5'10" B.Tech BMA working in MY Rd Department in world medical college Jhajjar. Father rtd from haryana govt. Mother lab Incharch (Retd.) MDU, Rohtak. Avoid Gotras: Phaugat, Deshwal. Cont.: 9996729404

हमें जिन पर गर्व है।

चौधरी बीरेंद्र सिंह पूर्व केंद्रीय मंत्री की सुपौत्री एवं हिसार लोकसभा के सांसद श्री बीजेंद्र सिंह, आई.ए.एस. (सेवानिवृत) की सुपुत्री कुमारी कुदरत बिजेंद्र सिंह को कैंब्रिज यूनिवर्सिटी के साउथ एशियाई अध्ययन केंद्र द्वारा हरियाणा में "पंचायत चुनाव में महिलाओं की भागीदारी" विषय के शोध में उत्कृष्ट स्थान प्राप्त करने पर विशेष तौर से सम्मानित किया गया।

कुमारी कुदरत ने कारमल कानवैट स्कूल चंडीगढ़ से प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त कर वर्ष 2019 में सेंट स्टीफन कॉलेज दिल्ली में उच्च शिक्षा ग्रहण की और इस समय कैंब्रिज यूनिवर्सिटी के मॉडर्न साउथ एशियाई अध्ययन केंद्र में एम.फिल. कर रही है और उनको हाल ही में सी.ए. बावली डिसरेशन पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया ।

कुमारी कुदरत बीजेंद्र सिंह की इस शानदार उपलब्धी के लिए जाट सभा चण्डीगढ़, पंचकूला एवं चौ० छोटूराम सेवा सदन कटरा–जम्मू के समस्त सदस्यगण तहदिल से अभिनन्दन व आभार व्यक्त करते है और उनके व समस्त परिवार के सुखद स्वास्थ्य एवं मंगलमय भविष्य के लिये परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते है।

आर्थिक अनुदान की अपील

प्रिय साथियों, भाई–बहनों एवं बुजुर्गो,

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि गांव नोमैई, ग्राम पंचायत कोटली बाजालान कटरा–जम्मु में जी.टी. रोड़ 10 पर चौ० छोटूराम यात्री निवास कटरा के लिये प्रस्तावित 10 कनाल भूस्थल पर चार दिवारी का निर्माण पूरा हो चुका है जिस पर लगभग 35 लाख रुपये खर्च हो चुके है। यात्री निवास स्थल पर विकास एवं पंचायत विभाग कटरा द्वारा सरकारी खर्च से दो महिला व पुरूष शौचालय एवं स्नानघर का निर्माण पहले से किया जा चुका है। यात्री स्थल की लिंक रोड़ पर छोटी पुलिया का काम भी शीघ्र पूरा हो जायेगा।

यात्री निवास भवन का शिलान्यास व दीन बंधु चौधरी छोटू राम को विशालकाय प्रतिमा का अनावरण 10 फरवरी 2019 को बसंत पंचमी उत्सव एवं दीनबंधु चौधरी छोटूराम की 136वीं जयंती समारोह के दौरान महामहिम राजपाल, जम्मु काश्मीर माननीय श्री सत्यपाल मलिक द्वारा तीन केंद्रीय मंत्री चौधरी सिंह केंद्रीय राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पीएमओ डा जितेंद्र सिंह व जाट सभा के अध्यक्ष एवं हरियाणा के पूर्व पुलिस महानिदेशक डा एम एस मलिक, भा०पु०से० (सेवानिवृत) की उपस्थिति में संपन्न किया गया।

यात्री भवन में फैमिली सुईट सहित 300 कमरे होगें। जिसमें मल्टीपर्पज हाल, कांफ्रैंस हाल, डिस्पेंसरी, मैडीकल स्टोर, लाइब्रेरी, बच्चों की प्रतिभा विकास एवं विभिन्न व्यवसायिक व सुरक्षा संबंधी सेवाओं में प्रवेश के लिए कोचिंग की विशेष सुविधाएं उपलब्ध होगी। सुरक्षा सैनिकों, शहीद परिवारों व उनके आश्रितों के लिए मुफ्त ठहरने तथा माता वैष्णों देवी के बदलुओं के लिए विशेष सुविधाएं प्रदान की जाएगी। यात्री निवास के निर्माण के लिये श्री राम कंवर साहु सुपुत्र श्री पूर्ण सिंह, गांव बीबीपुर जिला दान निवासी मकान नं0 110 सुभाष नगर, रोहतक द्वारा 5,11,111 रुपये तथा श्री सुखबीर सिंह नांदल, निवासी मकान नं. 426–427, नेमी सागर कालोनी, वैशाली नगर, जयपुर द्वारा 5,01,000 रुपये तथा श्री देशपाल सिंह निवासी मकान न0 990, सैक्टर–3, कुरुक्षेत्र (हरियाणा) द्वारा 5,00,000 रुपये की राशि जाट सभा को दान स्वरूप प्रदान की गई है।

अतः आप सभी से नम्र निवेदन है कि इस कल्याणकारी व पुनित सामाजिक कार्य के लिए स्वेच्छा अनुसार शीघ्र अनुदान देने की कृपा करें ताकि चार दिवारी पूरी होने के बाद निर्माण कार्य शुरू किया जा सके जोकि आज सभी के सहयोग से ही सम्भव हो सकेगा। यदि कोई दानी सज्जन यात्री निवास में कमरे के निर्माण हेतु 5 लाख रूपये या इससे अधिक की राशि दान देता है तो उसका नाम भवन परिसर में उचित स्थान पर अंकित किया जाएगा। यात्री निवास भवन के लिए अनुदान देने वाले सज्जनों का उचित विवरण रखा जाएगा और उनका नाम सभा द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'जाट लहर' में भी प्रकाशित किया जाएगा। भवन निर्माण की अनुदान राशि चैक, डिमांड ड्राफ्ट द्वारा 'जाट सभा चंडीगढ़' के पक्ष में जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, मध्य मार्ग, चंडीगढ़ में भेजी जा सकती है अथवा आर.टी.जी.एस की मार्फत सीधे जाट सभा के बचत खाता नंबर 50100023714552, आईएफएससी कोड– एचडीएफसी 0001324 में ट्रांसफर की जा सकती है। अनुदान की राशि आयकर अधिनियम की धारा 80–जी के तहत आयकर से मुक्त है।

निवेदक : कार्यकारिणी जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला,
चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा० राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : **0172-5086180, M-9877149580**
Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला
फोन : 0172–2590870,M-9467763337
Email: jatbhawan6pkl@gmail.com

चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू
Postal Registration No. CHD/0107/2021-2023

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।